इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉरपोरेशन
रेल मंत्रालय नवरत्न उपक्रम
भविष्य पथ पर

उड़ान

(नौवां अंक)

आई.आर.एफ.सी. की हिंदी की छमाही ई-पत्रिका

विकास की रफ्तार | निवेश का विस्तार | विश्वास की परंपरा | प्रतिबद्धता का संकल्प



1. अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से
2. निदेशक (वित्त) का संबोधन
3. संदेश
4. नारी
5. भारतीय रसोई की जड़ी-बूटी
6. रंगोत्सव....
7. आईआरएफसी द्वारा वर्ष 2025-26 के दौरान हिन्दी के प्रयोग-प्रसार के लिए किए गए कार्यों एवं उपलब्धियों का विवरण
8. वह ज्योति भला किस काम की
9. डी-डलर-इजेशन और पेट्रो-डॉलर अर्थव्यवस्था: एक शांत लेकिन निरंतर बदलाव
10. मांडू की अमर प्रेमगाथा
11. मां - कर्म और करुणा की प्रतिमा
12. आईआरएफसी के इतिहास में प्रथम गोल्फ टूर्नामेंट - उत्साह, खेल भावना एवं सौहार्द के यादगार पल (दिनांक 11.10.2025)
13. मेरी मैराथन की पहली दौड़ का अनुभव
14. आईआरएफसी के इतिहास में पहली बार कार्मिकों द्वारा दिल्ली वेदांता हाफ मैराथॉन में प्रतिभागिता की झलकियां (दिनांक: 12.10.2025)
15. होली
16. तीसरी बकरी
17. सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 के उपलक्ष्य में ओक ग्रोव विद्यालय, मसूरी में आयोजित पोस्टर प्रतियोगिता की झलकियाँ (दिनांक 28.10.2025)
18. इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित साइबर सुरक्षा जागरूकता एवं सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 की झलकियाँ (दिनांक 28.10.2025)
19. अलविदा 2025
20. पहला सुख निरोगी काया
21. वर्क फ्रॉम होम: फायदे और चुनौतियाँ
22. आईआरएफसी द्वारा भारत के समुद्री अवसंरचना एवं बंदरगाह संपर्क को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से किए गए दो समझौता ज्ञापनों की झलकियां (दिनांक: 05.11.2025)
23. ग्रीन बिजनेस की ओर बढ़ते कदम
24. आईआरएफसी के अधिकारियों की लोक उद्यम विभाग द्वारा आयोजित इंडस्ट्री 4.0 विषयक कार्यशाला में सहभागिता की झलकियां (दिनांक: 11.11.2025)
25. आईआरएफसी में तीन वर्षों का सफर: सीख, समर्पण और विकास की कहानी
26. मेरा उत्तराखंड – मेरे बचपन की यादों का घर
27. नारी शक्ति
28. अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री मनोज कुमार दूबे की अध्यक्षता में सभी अधिकारियों की सहभागिता के साथ एक संवादात्मक सत्र की झलकियां (दिनांक: 13.11.2025)
29. हिन्दी कथा साहित्य का प्रकाशस्तंभ - कृष्णा सोबती
30. सिक्का बदल गया - कृष्णा सोबती
31. योग और ध्यान का महत्व
32. महिला सशक्तिकरण – एक सशक्त और विकसित समाज की आधारशिला
33. चाय पर चर्चा
34. आईटी विभाग की रोज़मर्रा की दिनचर्या
35. चाँद से आगे का आसमान
36. घर से काम - शयनकक्ष या दफ़्तर
37. आईआरएफसी के 40वें स्थापना दिवस के अवसर पर होटल अशोक में आयोजित तकनीकी सम्मेलन की झलकियां (दिनांक: 12.12.2025)
38. भारत मंडपम में आईआरएफसी के 40वें स्थापना दिवस के आयोजन की झलकियां (दिनांक: 12.12.2025)
39. गीतों से रिक्त हो चुकी महफ़िल में
40. AI और Finance: आज के समय में सबसे उपयोगी तकनीक
41. आईआरएफसी कार्यालय में आयोजित हिन्दी कार्यशाला की झलकियां (दिनांक: 23.12.2025)
42. आईआरएफसी कार्यालय में आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की झलकियां (दिनांक: 23.12.2025)
43. आईआरएफसी द्वारा आयोजित वार्षिक खेल-कूद की झलकियां (दिनांक: 20.02.2026)
44. राजभाषा उत्सव-2026 की झलकियां (दिनांक: 20.03.2026)
45. आईआरएफसी कार्यालय में आयोजित हिन्दी कार्यशाला की झलकियां (दिनांक: 27.03.2026)
46. आईआरएफसी कार्यालय में आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की झलकियां (दिनांक: 30.03.2026)
47. पेड़ लगाओ, भविष्य बचाओ
48. मेरी इंटर्नशिप आईआरएफसी में - जो होता है, अच्छे के लिए होता है
49. मेरे अम्मा-बाबा (दादा-दादी): मेरे जीवन की सबसे अनमोल धरोहर
50. प्रतियोगी परीक्षायें V/S पेपर लीक
51. सिर्फ 10 मिनट नहीं थे वो

मुख्य संरक्षक
श्री मनोज कुमार दूबे
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

प्रधान संपादक
श्री मनीष चंद्र
कार्यपालक निदेशक
(मा. सं. एवं प्रशा.)

संपादक
श्री श्वेत केतु मिश्रा
मुख्य महाप्रबंधक
(तकनीकी)

उप संपादक
श्री अजय कक्कड़
सहायक प्रबंधक
(मा. सं. एवं प्रशा.)

सह संपादक
श्रीमती पुष्पिन्दर कौर
हिन्दी सलाहकार

संकलनकर्ता
श्री रोहन श्रीवास्तव
हिन्दी अनुवादक

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से



आईआरएफसी की हिन्दी की छमाही ई-पत्रिका "उड़ान" का नौवां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका न केवल हमारे संगठन की प्रगति और उपलब्धियों को दर्शाने का एक सशक्त माध्यम है बल्कि हमारे कार्मिकों की साहित्यिक अभिरुचि, रचनात्मक और मौलिक विचारों को भी एक सांझा मंच प्रदान करती है।

एक "नवरत्न" संस्थान के रूप में आईआरएफसी वर्तमान में देश के बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ करने में एक ऐतिहासिक और क्रांतिकारी भूमिका निभा रहा है। हमारी वित्तीय रणनीतियों और नवोन्मेषी प्रयासों ने भारतीय नेटवर्क को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाने में निरंतर योगदान दिया है।

वित्तीय वर्ष 2025-26 के दौरान हमारे रिकॉर्ड वित्तीय प्रदर्शन और ऐसेट मैनेजमेंट में दर्ज की गई शानदार वृद्धि और निरंतर शून्य "एनपीए" की उपलब्धि और विकास की नई ऊंचाइयों ने यह साबित कर दिया है कि हम भारतीय रेलवे के आधुनिकीकरण के सबसे मजबूत वित्तीय स्तंभ हैं।

हमारा लक्ष्य देश के माननीय प्रधानमंत्री जी के विकसित भारत 2047 के विज़न को साकार करने में भी अपनी अग्रणी भूमिका निभाना है। व्यावसायिक क्षेत्र में हासिल की गई उत्कृष्ट सफलता के साथ-साथ हमारा यह भी संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा के प्रयोग-प्रसार में भी नए कीर्तिमान स्थापित करें। यह पत्रिका "उड़ान" हमारे इसी सांझा संकल्प और सामूहिक प्रयासों की अभिव्यक्ति है।

इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए राजभाषा विभाग, संपादकीय टीम और अपनी रचनाओं के माध्यम से इसमें योगदान देने वाले सभी लेखक कर्मचारियों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूं।

मैं इस पत्रिका के नवीन अंक की अपार सफलता और आप सभी के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूं।

शुभकामनाओं सहित।

मनोज दूबे

(मनोज कुमार दूबे)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

निदेशक (वित्त) का संबोधन



आईआरएफसी की हिंदी की गृह-पत्रिका "उड़ान" के नौवें अंक को देखकर मुझे बहुत गर्व महसूस हो रहा है।

"उड़ान" पत्रिका हमारे संगठन की न केवल साहित्यिक और वैचारिक प्रगति की परिचायक है अपितु हमारे सामूहिक संकल्पना और उपलब्धियों को भी शब्दों के माध्यम से जीवंत करती है। एक अग्रणी वित्तीय संस्थान के रूप में आईआरएफसी ने भारतीय रेल के बुनियादी ढांचे के विकास को गति देने में हमेशा वित्तीय सुदृढ़ता और अनुशासन की मिसाल पेश की है। हमारी मजबूत वित्तीय रणनीतियां, कुशल परिसंपत्ति प्रबंधन और निवेशकों के अटूट भरोसे ने हमें बाजार में एक विशिष्ट पहचान दिलाई है। वित्त विभाग का निरंतर यह प्रयास रहता है कि हम अपनी वित्तीय प्रक्रियाओं में पारदर्शिता, सटीकता और कॉरपोरेट गवर्नेंस के उच्चतम मानकों को बनाए रखें।

इस व्यावसायिक यात्रा में राजभाषा हिंदी का स्थान सर्वोपरि है। मुझे खुशी है कि आईआरएफसी परिवार राजभाषा के प्रयोग को अपने दैनिक कार्यालयीन कामकाज में निरंतर बढ़ावा दे रहा है।

मुझे पूरा विश्वास है कि यह अंक भी हमेशा की तरह ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक और पठनीय होगा। मैं इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादकीय टीम और इस अंक में अपनी बहुमूल्य रचनाओं का योगदान देने वाले सभी सहकर्मियों को हार्दिक बधाई देता हूं।

शुभकामनाओं सहित।

रणधीर

(रणधीर सहाय)
निदेशक (वित्त)

संदेश



आईआरएफसी की हिन्दी की छमाही ई-पत्रिका "उड़ान" का नवीनतम अंक सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है।

यह पत्रिका हमारे कार्यालय की न केवल व्यावसायिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और वैचारिक प्रगति को दर्शाती है बल्कि राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में किए गए हमारे प्रयासों, संकल्पनाओं और उपलब्धियों का एक संपूर्ण विवरण भी प्रस्तुत करती है।

पत्रिका का नाम "उड़ान" हमारे संस्थान की उस सोच का प्रतीक है जो हमें अपने राजभाषा और प्रशासनिक दायित्व दोनों क्षेत्रों में प्रगति की नई ऊंचाइयां छूने को प्रेरित करती है। इस छमाही के दौरान आयोजित राजभाषा संबंधी विभिन्न प्रतियोगिताएं, हिन्दी कार्यशाला, बैठकें, सांस्कृतिक गतिविधियां इस बात का प्रमाण है कि हमारे कार्यालय में हिन्दी केवल एक सरकारी औपचारिकता नहीं बल्कि हमारे कार्य-संस्कृति का एक अभिन्न अंग बन चुकी है।

प्रशासनिक कार्यों में सरल, सहज और व्यावहारिक हिंदी का प्रयोग राजभाषा नीति की सफलता की कुंजी है। इस छमाही में कंप्यूटर और डिजिटल उपकरणों पर हिंदी टूल्स के उपयोग में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। हमारे अधिकारी और कर्मचारी अपना अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करने का प्रयास कर रहे हैं। यह पत्रिका हमारे इसी सामूहिक प्रयास और राजभाषा के प्रति हमारे सम्मान की सुंदर अभिव्यक्ति है।

इस पत्रिका में दिए गए ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक आलेख निश्चित रूप से सभी पाठकों का मार्गदर्शन करेंगे और यह अंक आपके बौद्धिक और मानसिक क्षितिज को विस्तार देगा।

इस पत्रिका में कंपनी की व्यावसायिक, सांस्कृतिक और राजभाषा विषयक गतिविधियों का सजीव चित्रण किया गया है। आपके सुझाव और प्रतिक्रियाएं हमारे लिए हमेशा की तरह अमूल्य मार्गदर्शक बने रहेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

(मनीष चंद्र)
कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन एवं प्रशासन)

नारी

नारी जीवन के पड़ावों की कहानी,
बचपन से बुढ़ापे तक की अनोखी जुबानी।
बचपन में खेलती, हंसती मुस्काती,
माँ की गोद में सुकून पाती।

किशोरावस्था में सपनों की उड़ान,
आंखों में चमक, दिल में अरमान,
दोस्ती में मिलती है सच्ची खुशी,
दोस्तो के संग बिताए पल हैं जिंदगी की रौशनी।

युवावस्था में प्रेम की बहार,
जीवन साथी के साथ नया संसार।
शादी के बाद बदल जाता है परिवार का रूप,
नए रिश्ते जुड़ते हैं, बढ़ती है जिम्मेदारियों की धूप

ससुराल में मिलती है नई पहचान,
पति के साथ बनता है नया जहान,
मातृत्व में खुशियों की बरसात,
बच्चों की किलकारी से घर आबाद।

उसके परिवार का प्यार और सम्मान,
उसकी जिंदगी का सबसे बड़ा वरदान।
नारी जीवन की यह यात्रा अनमोल,
हर पड़ाव पर उसकी कहानी अनोखी और अनमोल

वंदना दूबे
पत्नी श्री मनोज कुमार दूबे
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

भारतीय रसोई की जड़ी-बूटी

अनादि काल से जड़ी बूटियों का उपयोग स्वास्थ्य की रक्षा के लिए आहार पूरक के रूप में किया जाता है। भारत में, हर्बल दवाओं का मार्गदर्शन "आयुर्वेद" द्वारा किया जाता है। मैं अपने दैनिक जीवन में विभिन्न चिकित्सा स्थितियों में पौधों के हिस्सों और उनके उपयोग के बारे में जानकारी साझा करना चाहती हूँ जो हम अपनी रसोई में हर दिन उपयोग करते हैं।

1. **लहसुन** - ये भारत में एक महत्वपूर्ण मसाला है, इसका उपयोग भारतीय व्यंजनों में बड़े पैमाने में किया जाता है। लहसुन का तेल त्वचा के दाने, कान और जोड़ों के दर्द को दूर करने के लिए उपयोगी है।
2. **कुमारि** - "एलोवेरा" जो कुमारि के नाम से भी जाना जाता है। भारतीय बागों में आसानी से उगाया जाता है। ये बहुत ही अच्छा मॉइस्चराइजर है। इससे दवा बनाई जाती है जो महिला प्रजनन प्रणाली के लिए टॉनिक है।
3. **नीम** - आयुर्वेद में नीम का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। चाहे दांतों के ब्रश के रूप में या त्वचा की बीमारियों के लिए दवा बनानी हो, मधुमेह, मलेरिया बुखार हर जगह इसका उपयोग होता है।
4. **अदरक** - लगभग हर भारतीय व्यंजन में इसका इस्तेमाल होता है। अदरक की चाय सर्दी में बहुत आराम देती है। इसका सूखा रूप "सौंठ" चटनियों में भी प्रयोग होता है।
5. **मेथी** - मेथी एक जड़ी-बूटी है जो पूरे भारत में उगाई जाती है। इसका बीज पाचन तंत्र के लिए टॉनिक है। इसका प्रयोग रक्त शर्करा, कोलेस्ट्रॉल और मोटापा नियंत्रित करता है।
6. **आंवला** - आंवला विटामिन-सी से भरपूर होता है। इसके फल, पत्ती और बीज सब आयुर्वेद में प्रयोग होते है। यह प्रतिरक्षा प्रणाली के लिए बहुत अच्छा होता है।
7. **तुलसी** - इसे पवित्र तुलसी भी कहा जाता है जो हर घर में पायी जाती है। सर्दी, खांसी जैसी श्वसन संबंधी बीमारियों में राहत देती है। इसमें एंटी-कैंसर और एंटी-अस्थमा के भी गुण हैं।

उम्मीद है ये जानकारी आपके लिए उपयोगी होगी।

वंदना दूबे
पत्नी श्री मनोज कुमार दूबे
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक



लहसुन



कुमारि



नीम



अदरक



मेथी



आंवला



तुलसी

रंगोत्सव....



देखो आया रंगोत्सव आज
आया होली का त्यौहार आज
साथ लाया खुशियां हज़ार
हरा रंग है दिखे सुंदर आज
कहता बातें हज़ार
लाल, हरा, नीला और पीला
देख मन होता प्रफुल्लित आज
गुजिया की है अपनी ही बात
मानो कहता खाओ जब तक मन करे आज
कौन है गोरा, कौन है काला
होली को नहीं पता
सब का मिलन होता ऐसा
मानो हो रिश्ता सदियों का
किस किस के हैं यहां कितने रंग
कौन जाने कौन मिले यहां किसके संग?
देता रंगोत्सव ये संदेश...
करो कोशिश रंग भरने की अपने प्रिय के जीवन में
ना कर दो रंगहीन उसी के जीवन को
ना कर दो रंगहीन उसी के जीवन को

खुद को खुद से ✍️

विनिता मिश्रा
परिवार सदस्य श्री मनोज कुमार दूबे
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉरपोरेशन
(रेल मंत्रालय का नवरत्न उपक्रम)
भविष्य पथ पर

आईआरएफसी द्वारा वर्ष 2025-26 के दौरान हिन्दी के प्रयोग-प्रसार के लिए किए गए कार्यों एवं उपलब्धियों का विवरण

1. आईआरएफसी कार्यालय में गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार प्रत्येक तिमाही में हिंदी कार्यशाला और राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का नियमित रूप से आयोजन किया जाता है। राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में हिंदी के प्रयोग-प्रसार पर विस्तृत रूप से चर्चा की जाती है।
2. यह अत्यंत हर्ष की बात है कि भारत सरकार द्वारा आईआरएफसी को 3 मार्च 2025 को नवरत्न कंपनी के रूप में अपग्रेड किया गया है। यह कंपनी की व्यावसायिक उपलब्धियों का प्रतीक है।
3. हिंदी के प्रयोग-प्रसार के साथ-साथ आईआरएफसी ने 8 मार्च 2025 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस भी अत्यंत धूमधाम से मनाया इसमें सभी महिलाओं ने अपने अपने अनुभवों को सांझा किया तथा कविताएं भी सुनाई।
4. 13 मार्च को इंडिया हैबिटेट सेंटर में होली का उत्सव मनाया गया जिसमें सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों ने कविता,डांस,हास्य से अपनी अपनी कला का प्रदर्शन किया।
5. जून 2025 तिमाही में आयोजित हिंदी कार्यशाला में केंद्रीय अनुवाद व्यूरो से संयुक्त निदेशक, श्री नरेश कुमार जी को आमंत्रित किया गया। इस कार्यशाला में उन्होंने हिंदी से संबंधित नियमों की जानकारी दी और सबको हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित किया। यह कार्यशाला बेहद सफल रही।
6. जून 2025 में गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह में आईआरएफसी के अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), दिल्ली (उपक्रम-2) के विभिन्न कार्यालयों द्वारा आयोजित कार्यक्रम/ प्रतियोगिताओं में भी आईआरएफसी से अधिकारी/ कर्मचारी सदैव भाग लेते हैं और प्रतियोगिताओं में भी हिस्सा लेते हैं।
7. आईआरएफसी कार्यालय में 12 अगस्त, 2025 को स्वच्छता और वृक्षारोपण कार्यक्रम तथा नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया।
8. आईआरएफसी कार्यालय में 15 अगस्त, 2025 को स्वतंत्रता दिवस अत्यंत धूमधाम से आयोजित किया गया। कार्यालय परिसर में राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। सभी प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर आईआरएफसी की छमाही गृह ई-पत्रिका उड़ान के सातवें अंक का विमोचन भी किया गया। इस संबंध में यह उल्लेखनीय है कि आईआरएफसी की ई-पत्रिका "उड़ान" को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 20 अगस्त, 2025 को संपन्न 15वीं छमाही बैठक में "सम्मान शील्ड पुरस्कार" से सम्मानित किया गया है। इससे पूर्व वर्ष 2023 में भी "उड़ान" पत्रिका को सम्मान शील्ड से पुरस्कृत किया जा चुका है। निश्चय ही यह आईआरएफसी के लिए बेहद गौरवपूर्ण उपलब्धि है।
9. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 8(4) के अंतर्गत प्रवीणता प्राप्त अधिकारियों/कर्मचारियों को संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा जारी संशोधित प्रारूप के अनुसार पुन: 02.02.2026 को व्यक्तिश: आदेश जारी किए गए। ये आदेश पहले 03.09.2025 को जारी किए गए थे।
10. आईआरएफसी कार्यालय में 14 सितम्बर, 2025 में 28 सितम्बर, 2025 तक हिन्दी पखवाड़ा का अत्यंत भव्य तरीके से आयोजन किया गया। आईआरएफसी की रा.भा.का.स. की 110वीं तिमाही बैठक तथा हिन्दी कार्यशाला का सम्मिलित आयोजन Scope Social Interaction Centre के Orchid Multipurpose Hall के कॉन्फ्रेंस हॉल में बहुत शानदार तरीके से किया गया जिसमें रेल मंत्रालय के पूर्व संयुक्त सचिव, श्री प्रेमपाल शर्मा जी को विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। हिन्दी पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे हिन्दी निबंध प्रतियोगिता, हिन्दी सुलेख प्रतियोगिता, हिन्दी स्लोगन प्रतियोगिता, हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता तथा हिन्दी चित्र-वर्णन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रत्येक प्रतियोगिता के चयनित प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा सांत्वना नकद पुरस्कार से पुरस्कृत भी किया गया। इन प्रतियोगिताओं में आईआरएफसी के कार्मिकों ने बड़े उत्साह से भाग लिया।

11. 27.11.2025 को हिन्दी जगत के महान कवि एवं लेखक श्री हरिवंश राय बच्चन जी की जयंती मनाई गई जिसमे उनकी प्रसिद्ध कृतियों के बारे में चर्चा की गई।
12. दिनांकः 23.12.2025 को हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति दिल्ली उपक्रम-2 के सदस्य सचिव डॉ. राजाराम यादव जी को व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया था। इस कार्यशाला में अधिकारियों/ कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।
13. कार्मिकों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए आईआरएफसी द्वारा 20.02.2026 को करनैल सिंह स्टेडियम में खेल-कूद दिवस का भव्य आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।
14. आईआरएफसी कार्यालय में 30.03.2026 को आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान हिन्दी की ई-पत्रिका "उड़ान" के आठवें अंक का विमोचन किया गया जिसमें आईआरएफसी के कार्मिकों की मौलिक रचनाओं तथा कंपनी की व्यावसायिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों आदि को शामिल किया गया है।
15. आईआरएफसी कार्यालय में 30.03.2026 को आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान हिन्दी की ई-पत्रिका "उड़ान" के आठवें अंक का विमोचन किया गया जिसमें आईआरएफसी के कार्मिकों की मौलिक रचनाओं तथा कंपनी की व्यावसायिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों आदि को शामिल किया गया है।
16. ई-ऑफिस में कार्मिकों के सभी नाम/पदनाम हिंदी में किए गए हैं।
17. सभी कार्मिकों को प्रतिदिन एक अंग्रेजी से हिंदी शब्द ई-मेल किया जाता है।
18. कार्मिकों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए आईआरएफसी द्वारा 20.02.2026 को करनैल सिंह स्टेडियम में खेल-कूद दिवस का भव्य आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।
19. आईआरएफसी हिंदी के प्रयोग-प्रसार के साथ सांस्कृतिक गतिविधियों पर भी पूरा ध्यान देता है। 08 मार्च, 2026 को आईआरएफसी कार्यालय में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस अत्यंत धूमधाम से मनाया गया जिसमें विभिन्न कार्मिकों द्वारा कविता पाठ किया गया।
20. 16.03.2026 को गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के पूर्व संयुक्त निदेशक (कार्यान्वयन)/सलाहकार द्वारा आईआरएफसी कार्यालय का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया गया। निरीक्षण रिपोर्ट अभी प्रतीक्षित है।
21. नराकास दिल्ली (उपक्रम-2) के तत्वावधान में चार सदस्य कार्यालयों आईआरएफसी, पावर ग्रिड महारानीबाग, पावर ग्रिड झटीकरा तथा नीपको (समन्वय) द्वारा दिनांक 20.03.2026 को एक-दिवसीय "राजभाषा उत्सव – 2026" का अत्यंत शानदार एवं भव्य आयोजन मिर्जा गालिब हॉल, स्कोप कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली में किया गया जिसमें राजभाषा विषयक विषयों पर सार्थक चर्चा की गई तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम (गायन, वादन, नृत्य) आयोजित किए गए। जिनका सभी श्रोताओं ने भरपूर आनंद लिया।
22. दिनांक 26.03.2026 को आईआरएफसी कार्यालय में प्रसिद्ध भारतीय कवयित्री, निबंधकार एवं कथाकार महादेवी वर्मा जी की जयंती मनाई गई। उन्हें आधुनिक मीरा के नाम से भी जाना जाता है।
23. आईआरएफसी कार्यालय में वेतन पर्चियां द्विभाषी रूप में कर दी गई है। ई आर पी से जाने वाले ई-मेल को भी द्विभाषी किया जा रहा है।
24. ई-ऑफिस में कार्मिकों के सभी नाम/पदनाम हिंदी में किए गए हैं। उनकी वेतन पर्चियों को पूर्णतः हिन्दी-अंग्रेजी द्विभाषी रूप में जारी किया जाता है। सभी कार्मिकों को प्रतिदिन एक अंग्रेजी से हिंदी शब्द ई-मेल किया जाता है।
25. आईआरएफसी कार्यालय में सभी मानक नेमी पत्रों/फॉर्मों के द्विभाषी टेम्प्लेट भी उपलब्ध करवाए गए हैं। इस समय 53 मानक मसौदे उपलब्ध करवाये जा चुके हैं।
26. आईआरएफसी के सभी कर्मियों को प्रतिदिन एक अंग्रेजी से हिन्दी शब्द ई-मेल किया जाता है ताकि उन्हें हिंदी में काम करने में
27. राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले सभी प्रलेखों को पूर्णतः द्विभाषी जारी किया जाता है। गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों का शत प्रतिशत अनुपालन किया जाता है। रेल मंत्रालय तथा नराकास द्वारा आयोजित सभी बैठकों में भाग लिया जाता है। गृह मंत्रालय, रेल मंत्रालय, संसदीय राजभाषा समिति तथा नराकास से प्राप्त पत्रों का तुरंत निपटान किया जाता है। सभी अधिकारी/कर्मचारी अपना अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करने का प्रयास कर रहे हैं।

वह ज्योति भला किस काम की

वह ज्योति भला किस काम की जो,
रौशन ना करे चरागों को।
वह व्यर्थ हवा का झोंका है।
गमका न सके परागों को।

चंदन मत बोलो, काठ कहो;
महका न सके जो बागों को।
वह बुझी हुई चिंगारी है,
धधका न सके जो आगों को।

शायर मत कहो, बीमार कहो,
बेचैन जो दिल के दागों से।
वह खोजी निरा खयाली है,
अनजाना अहम सुरागों से।

बेजान जान ही कहो उसे,
जो रिक्त उमंग के भावों से।
मुर्दा मछली बह जाती है,
पानी के संग बहावों से।

वह काम भला किस काम का है?
पूरी हो जिससे आस नहीं।
वह सर्जक बस सौदागर है,
हो धीरज जिसके पास नहीं।

वो खून भला किस काम का? जो,
आ सके देश के काम नहीं।
वो गीत भला किस काम का जो?
दे सके धैर्य आराम नहीं।

धीरज की दौलत बनी रहे,
हर कार्य और व्यवहारों में।
मिल पाएगी सारी खुशियां,
हर मकसद औ व्यापारों में।।...

डॉ. राजा राम यादव
उप महाप्रबंधक/ हिंदी (दिल्ली मेट्रो)
सदस्य सचिव, नराकास, दिल्ली (उपक्रम-2)

डी-डलर-इजेशन और पेट्रो-डॉलर अर्थव्यवस्था: एक शांत लेकिन निरंतर बदलाव

1970 के दशक में शुरू हुई "पेट्रो-डॉलर" प्रणाली वैश्विक वित्त का एक आधार स्तंभ रही है, लेकिन अब यह एक नए और खंडित युग में प्रवेश कर रही है। मूल रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका और सऊदी अरब के बीच समझौतों के माध्यम से स्थापित इस प्रणाली ने यह सुनिश्चित किया कि तेल की कीमतें और उसका निपटान मुख्य रूप से अमेरिकी डॉलर में हो। बदले में, तेल से होने वाली अतिरिक्त कमाई को वापस अमेरिकी ट्रेजरी (सरकारी बॉन्ड) में निवेश किया गया। इसने डॉलर की मांग का एक चक्र बनाया, जिससे अमेरिका को अपने घाटे की भरपाई करने में मदद मिली और डॉलर दुनिया की प्रमुख रिजर्व मुद्रा बन गया।

आज, हम डॉलर के अचानक पतन के बजाय एक "धीमे पुनर्संतुलन" के गवाह बन रहे हैं। हालांकि डॉलर अभी भी वैश्विक व्यापार में सबसे शक्तिशाली है, लेकिन अंतरराष्ट्रीय मौद्रिक प्रणाली का ढांचा अब विविध (diversified) हो रहा है।



डेटा: एक क्रमिक गिरावट

IMF COFER (विदेशी मुद्रा भंडार की मुद्रा संरचना) के हालिया आंकड़े इस निरंतर रुझान को दर्शाते हैं। 2025 की तीसरी तिमाही तक, वैश्विक विदेशी मुद्रा भंडार में अमेरिकी डॉलर की हिस्सेदारी 56.92% थी, जो पिछली तिमाही के 57.08% से थोड़ी कम है।

तुलना के लिए, 1990 के दशक के उत्तरार्ध में डॉलर की हिस्सेदारी 71% थी। जहाँ यूरो (~20%), येन (~6%), और पाउंड (~5%) प्राथमिक विकल्प बने हुए हैं, वहीं असली कहानी "गैर-पारंपरिक" मुद्राओं और सोने की बढ़ती लोकप्रियता में छिपी है।

ब्रिक्स (BRICS) की पहल और द यूनिट (The Unit)

ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका (नए सदस्यों के साथ) इस बदलाव के अग्रदूत हैं। उनकी रणनीति दो चरणों में काम कर रही है:

1. स्थानीय मुद्रा में व्यापार: डॉलर को पूरी तरह से बायपास करने के लिए द्विपक्षीय समझौते करना। उदाहरण के लिए, रूस और चीन के बीच अधिकांश व्यापार अब रूबल और युआन में होता है।

2. स्वतंत्र बुनियादी ढांचा: 2026 में ब्रिक्स पे (BRICS Pay) की शुरुआत का उद्देश्य पश्चिमी प्रभुत्व वाले स्विफ्ट (SWIFT) सिस्टम से हटकर सीधे क्रॉस-बॉर्डर डिजिटल भुगतान की सुविधा देना है।

इसके अलावा, "द यूनिट" नामक एक वैचारिक निपटान उपकरण पर चर्चा जारी है। हालांकि यह अभी भी एक प्रस्ताव है, यह एक ब्लॉकचेन-आधारित प्रणाली की कल्पना करता है जो 40% सोने और 60% सदस्य देशों की मुद्राओं द्वारा समर्थित होगी। इसका उद्देश्य विनिमय दर की अस्थिरता को कम करना और अमेरिकी मौद्रिक नीति पर निर्भरता घटाना है।

सोने की भूमिका: एक सुरक्षित विकल्प

केंद्रीय बैंकों ने भू-राजनीतिक जोखिमों और अमेरिकी प्रतिबंधों से खुद को बचाने के लिए "तटस्थ" संपत्ति (Neutral Assets) की ओर रुख किया है। 2025 में, शुद्ध सोने की खरीद 863 टन तक पहुंच गई। हालांकि यह दशक के शुरुआत के 1000 टन के रिकॉर्ड से कम है, लेकिन यह 2010-2021 के दीर्घकालिक औसत (473 टन) से लगभग दोगुना है। उभरते बाजारों की यह मांग दर्शाती है कि देश ऐसी संपत्ति चाहते हैं जो किसी एक देश के नियंत्रण में न हो।

एकाधिकार का अंत

सबसे प्रतीकात्मक बदलाव खाड़ी देशों (Gulf countries) में हो रहा है। पारंपरिक अमेरिका-सऊदी संबंध अब एक विशेष (exclusive) साझेदारी से बदलकर एक व्यावहारिक और गैर-विशिष्ट साझेदारी में बदल गए हैं। चीन को तेल की बिक्री के लिए सऊदी अरब द्वारा युआन स्वीकार करने की इच्छा "केवल-डॉलर" वाले युग के अंत का संकेत है।

वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए इसके मायने:

- **बहु-मुद्रा वास्तविकता:** हम एक "बहुध्रुवीय" (multipolar) वित्तीय दुनिया की ओर बढ़ रहे हैं जहाँ अलग-अलग क्षेत्र अपनी स्थानीय मुद्राओं को प्राथमिकता दे सकते हैं।
- **अमेरिकी विशेषाधिकार में कमी:** जैसे-जैसे दुनिया डॉलर पर कम निर्भर होगी, अमेरिका को उच्च उधार लागत का सामना करना पड़ सकता है और आर्थिक प्रतिबंधों में उसका प्रभाव कम हो सकता है।
- **विविधता से लचीलापन:** व्यवसायों के लिए, यह बदलाव कई मुद्राओं में हेजिंग (Hedging) और नए भुगतान प्लेटफार्मों पर नज़र रखने की आवश्यकता पैदा करता है।

निष्कर्ष

डी-डलर-इजेशन रातों-रात होने वाली क्रांति नहीं है; यह एक संरचनात्मक विकास है। डॉलर की गहरी तरलता (liquidity) और अमेरिकी बाजारों की पारदर्शिता का मतलब है कि यह निकट भविष्य के लिए "प्रथम" बना रहेगा। हालांकि, पेट्रो-डॉलर की नींव में दरारें बताती हैं कि एक ही निर्विवाद वैश्विक मुद्रा का युग धीरे-धीरे समाप्त हो रहा है।

सचिन श्रीपाल जैन
संयुक्त महाप्रबंधक (वित्त)

मांडू की अमर प्रेमगाथा

रूपमती और बाज बहादुर: प्रेम, पराक्रम और त्याग की अनुपम कथा

भारत की धरती केवल राजाओं और युद्धों की गाथाओं से ही नहीं, बल्कि प्रेम, त्याग और आत्मसम्मान की अमर कहानियों से भी सुशोभित है। इतिहास के पन्नों में कुछ प्रेम कथाएँ ऐसी दर्ज हैं जो समय के साथ धूमिल नहीं होतीं, बल्कि और अधिक उज्ज्वल हो उठती हैं। ऐसी ही एक कथा है मालवा की स्वर-साम्राज्ञी रूपमती और संगीत-प्रेमी योद्धा बाज बहादुर की।
यह केवल दो प्रेमियों की कहानी नहीं है; यह भारतीय संस्कृति, संगीत, नारी सम्मान, वीरता और मातृभूमि के प्रति समर्पण की भी गाथा है।

स्वर्ग से सुंदर मांडू

सोलहवीं शताब्दी का मांडू भारत का एक अनुपम रत्न था। विंध्याचल की ऊँची पहाड़ियों पर बसा यह नगर बादलों का मित्र और हवाओं का साथी था। विशाल महल, गगनचुंबी द्वार, झीलों में झलकते महलों के प्रतिबिंब और दूर तक फैली हरियाली-मानो प्रकृति ने स्वयं इसे अपने हाथों से सजाया हो।
मालवा के सुल्तान बाज बहादुर कला और संगीत के महान संरक्षक थे। तलवार चलाने में जितने दक्ष थे, उतनी ही कुशलता से रबाब के तार भी छेड़ते थे। उनके दरबार में कवियों, गायकों और कलाकारों का सम्मान होता था।
किन्तु नियति ने उनके लिए एक और अनमोल उपहार संजो रखा था। जब पहली बार मिले दो स्वर एक दिन शिकार के लिए निकले बाज बहादुर नर्मदा घाटी के निकट पहुँचे। तभी हवा के झोंकों के साथ एक अद्भुत स्वर उनके कानों में पड़ा। वह कोई साधारण गीत नहीं था। ऐसा लग रहा था जैसे नर्मदा की लहरें स्वयं गा रही हों। स्वर की दिशा में बढ़ते हुए वे एक ऊँचे टीले पर पहुँचे। वहाँ एक युवती अपनी सखियों के साथ बैठी थी। उसके मुख पर ऐसी आभा थी कि उगते सूर्य की लालिमा भी फीकी लगे।
लंबे केश, कमल जैसी आँखें, तेजस्वी मुखमंडल और स्वर में ऐसी मिठास कि पक्षी भी मौन हो जाएँ। गीत समाप्त हुआ। बाज बहादुर कुछ क्षणों तक मौन खड़े रहे। "क्या यह स्वर किसी मनुष्य का था या किसी अप्सरा का?" उन्होंने मुस्कराकर पूछा। युवती ने विनम्रता से उत्तर दिया-
"मैं तो केवल माँ नर्मदा की पुत्री हूँ महाराज।"
और नाम?
रूपमती।
बाज बहादुर ने मन ही मन कहा-
"ईश्वर ने सचमुच रूप और संगीत दोनों को एक ही शरीर में उतार दिया है।"
प्रेम का अंकुर मुलाकातें बढ़ीं। कभी नर्मदा तट पर संगीत की चर्चा होती, कभी कविता की।
धीरे-धीरे दोनों समझने लगे कि उन्हें केवल एक-दूसरे की प्रतिभा नहीं, बल्कि व्यक्तित्व भी आकर्षित कर रहा है।
एक शाम अस्त होते सूर्य को देखते हुए बाज बहादुर ने पूछा-
"रूपमती, तुम्हें सबसे प्रिय क्या है?"
रूपमती ने बिना सोचे उत्तर दिया-
"माँ नर्मदा और मेरी मातृभूमि मालवा।"
"और यदि कभी इन दोनों में से किसी एक को चुनना पड़े?"
रूपमती ने दृढ़ स्वर में कहा- "जो अपनी धरती और अपनी संस्कृति से प्रेम नहीं कर सकता, वह किसी व्यक्ति से भी सच्चा प्रेम नहीं कर सकता।
बाज बहादुर ने पहली बार महसूस किया कि यह युवती केवल सुंदर ही नहीं, असाधारण रूप से विचारवान भी है। प्रेम और राष्ट्रधर्म कुछ समय बाद बाज बहादुर ने विवाह का प्रस्ताव रखा। रूपमती ने कहा-

"महाराज, प्रेम केवल हृदय का विषय नहीं होता। इसमें आत्मा और कर्तव्य भी जुड़े होते हैं।"
मैं समझा नहीं। यदि कभी मालवा संकट में पड़े, तो वचन दीजिए कि आप पहले मातृभूमि की रक्षा करेंगे और बाद में प्रेम की। बाज बहादुर की आँखों में चमक आ गई। उन्होंने अपनी तलवार म्यान से निकाली और आकाश की ओर उठाकर कहा-
"मैं बाज बहादुर, इस पवित्र धरती की शपथ लेकर कहता हूँ कि मेरे लिए मालवा की प्रतिष्ठा और तुम्हारा सम्मान जीवन से भी अधिक मूल्यवान होगा।" रूपमती की आँखें नम हो गईं। उसी दिन दो आत्माओं का मिलन हुआ। संगीत का स्वर्ण युग विवाह के बाद मांडू मानो संगीत का तीर्थ बन गया। रात होते ही महलों में दीप जल उठते। रबाब के तार झंकृत होते। रूपमती की आवाज़ वातावरण में गूँजती-
और ऐसा प्रतीत होता मानो चंद्रमा भी सुनने के लिए ठहर गया हो। मालवा के लोग अपने राजा और रानी से प्रेम करते थे। क्योंकि वे केवल शासक नहीं थे, संस्कृति और लोकजीवन के संरक्षक भी थे। युद्ध के बादल किन्तु दिल्ली में मुगल साम्राज्य विस्तार कर रहा था। अकबर के सेनापति आदम खान की दृष्टि मालवा पर पड़ी। मालवा पर आक्रमण की तैयारी शुरू हो गई। जब यह समाचार मांडू पहुँचा तो पूरे राज्य में चिंता फैल गई। बाज बहादुर ने सेना को संगठित किया। प्रस्थान से पहले वे रूपमती से मिलने पहुँचे।
"मैं युद्ध के लिए जा रहा हूँ।"
रूपमती ने उनकी आँखों में देखा।
"विजयी होकर लौटिएगा।"
"यदि भाग्य ने साथ न दिया तो?"
रूपमती ने दृढ़ स्वर में कहा- "वीर हार सकते हैं, पर पराजित नहीं होते।"
"और तुम?"
"मैं मालवा की बेटी हूँ। मेरे शरीर को कोई बंदी बना सकता है, आत्मा को नहीं।"
यह सुनकर बाज बहादुर का सीना गर्व से चौड़ा हो गया। अंतिम विरह युद्ध हुआ। मालवा की सेना ने अद्भुत साहस दिखाया। लेकिन संख्या और संसाधनों में मुगल सेना कहीं अधिक शक्तिशाली थी। बाज बहादुर को पीछे हटना पड़ा। मांडू पर संकट मंडराने लगा। रूपमती को समाचार मिला कि शत्रु सेना महल की ओर बढ़ रही है। उन्होंने अंतिम बार नर्मदा की दिशा में देखा। फिर अपनी सखी से कहा-
"जिस प्रेम ने मुझे सम्मान दिया, मैं उस प्रेम को अपमानित नहीं होने दूँगी।"
उन्होंने विषपान कर लिया। कहा जाता है कि उस समय उनकी आँखों में भय नहीं था। केवल नर्मदा, मालवा और बाज बहादुर की स्मृतियाँ थीं। इतिहास बन गया प्रेम। जब बाज बहादुर को यह समाचार मिला तो वे स्तब्ध रह गए। उन्होंने मांडू की पहाड़ियों की ओर देखते हुए कहा-
"आज मैंने केवल अपनी प्रेयसी नहीं खोई, बल्कि मालवा की आत्मा को खो दिया है।"
समय बीत गया। राज्य बदल गए। साम्राज्य मिट गए। लेकिन रूपमती और बाज बहादुर की कथा आज भी जीवित है। मांडू की हवाएँ आज भी उनके प्रेमगीत सुनाती हैं। रूपमती मंडप आज भी नर्मदा की ओर निहारता है। और इतिहास आज भी यह संदेश देता है-
"सच्चा प्रेम केवल मिलन का नाम नहीं; वह सम्मान, त्याग, कर्तव्य और आत्मबलिदान का दूसरा नाम है।"
उपसंहार, रूपमती और बाज बहादुर की कहानी हमें सिखाती है कि प्रेम तब महान बनता है जब उसमें संस्कृति का सम्मान, मातृभूमि के प्रति समर्पण, आत्मसम्मान की रक्षा और त्याग का साहस शामिल हो।
यही कारण है कि सदियों बाद भी मांडू की पहाड़ियों में गूँजता है-
"राज्य मिट गए, साम्राज्य ढह गए, पर प्रेम और सम्मान की यह गाथा अमर हो गई।"

रणविजय सिंह
वरिष्ठ जन संपर्क अधिकारी

मां - कर्म और करुणा की प्रतिमा

चार बजे उठ जाती है मां,
नींद से पहले भोले को मनाती है मां,
आंगन बहार चूल्हा सुलगाती है मां,
हर कौर में ममता घोल जाती है मां।

कितने हज़ारों कदम यूं ही चल देती है मां,
थकान को हंसकर टाल देती है मां,
बेटी के लिए अनार-गुड़ लाती है मां,
लोहे की कड़ाही में ताकत पकाती है मां।

लोग कुछ भी कहें, मुस्कुरा देती है मां,
दिल के जख्मों पर भोले का लेप लगाती है मां,
एक हाथ में झाड़ू, दूजे में दुआ है मां,
हर सांस में बेटियों की दुआ है मां।

कहती है मां, "बड़ी IAS बनेगी",
कहती है मां, "छोटी कोड लिखेगी",
भोले की चौखट पर शीश नवाकर मां,
अपना हर सुख बेटियों पर लिख देती है मां।

न कोई रानी, न परियों की कहानी है मां,
भोले की भक्त, कर्म की महारानी है मां,
जिस घर में बसती है ऐसी मां,
वहां कैलाश खुद उतर आता है मां।

मनोरमा कुमारी
पत्नी श्री संजय कुमार
प्रबंधक (वित्त)

इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉरपोरेशन
(रेल मंत्रालय का नवरत्न उपक्रम)
भविष्य पथ पर

आईआरएफसी के इतिहास में प्रथम गोल्फ टूर्नामेंट - उत्साह, खेल भावना एवं सौहार्द के यादगार पल (दिनांक 11.10.2025)








INDIAN RAILWAY
FINANCE CORPORATION
#FUTURE ON TRACK


INDIAN
RAILWAY
FINANCE
CORPORATION
(A NAVRATNA CPSE UNDER MINISTRY OF RAILWAYS)
e on Track
इंडियन
रेलवे
फाइनेंस
कॉरपोरेशन
(रेल मंत्रालय का नवरत्न उपक्रम)
भविष्य पथ पर


IRFC


IRFC


FINANCE


INDIAN RAILWA


INDIAN RAILWAY




भविष्य पथ


DIAN
ILWAY
INANCE
CORPORATION
on Track

मेरी मैराथन की पहली दौड़ का अनुभव

आज मैंने अपनी पहली मैराथन दौड़ पूरी की और यह मेरे लिए एक अविस्मरणीय अनुभव था। मेरी अग्रणी कंपनी का समर्थन और अनुभवी बुजुर्गों का साथ मुझे इस यात्रा में मिला, जिसने मेरी यात्रा को और भी विशेष बना दिया।

आपकी जानकारी हेतू बता दूं मैराथन क्या है? और कितने तरह की होती है...

मैराथन एक लंबी दूरी की दौड़ है, जिसमें प्रतिभागी एक निश्चित दूरी को पूरा करने का प्रयास करते हैं। आमतौर पर मैराथन की दूरी 42.195 किलोमीटर होती है।

मैराथन के प्रकार

1. फुल मैराथन: 42.195 किलोमीटर की दूरी।
2. हाफ मैराथन: 21.0975 किलोमीटर की दूरी।
3. मिनी मैराथन: आमतौर पर 5-10 किलोमीटर की दूरी।

मैराथन दौड़ने से तनाव कम होता है और आत्मविश्वास बढ़ता है। इसके अलावा यह भी बताना लाभप्रद होगा कि मैराथन में भाग लेने से नए लोगों से मिलने और दोस्ती करने का अवसर मिलता है।

मैराथन में विभिन्न उम्र के लोगों को देखना एक अद्भुत अनुभव था। कुछ युवा थे, तो कुछ बुजुर्ग, लेकिन सभी के चेहरे पर एक ही भाव था - लक्ष्य को प्राप्त करने का जज्बा। इस दौरान मैं लगभग 80 वर्ष के एक बुजुर्ग व्यक्ति से मिला जो मैराथन में मुझसे आगे ही चल रहे थे और जिन्होंने पिछले 40 मैराथन में निरंतर भाग लिया और अपनी दौड़ को पूरा किया। निस्संदेह यह मेरे लिए एक अजूबे से कम नहीं था।

उनकी ऊर्जा और उत्साह ने मुझे प्रेरित किया और मुझे आगे बढ़ने की ताकत दी। मैंने देखा कि कुछ लोग व्हीलचेयर पर थे, तो कुछ ने अपने बच्चों को गोद में लेकर दौड़ लगाई। यह दृश्य मेरे लिए बहुत प्रेरणादायक था। जब मैं फिनिश लाइन के करीब पहुंचा, तो मेरे शरीर में एक नई ऊर्जा का संचार हुआ। जैसे ही मैंने लाइन पार की, मेरी आंखों में आंसू आ गए। यह केवल एक जीत नहीं थी, बल्कि मेरे आत्मविश्वास और दृढ़ता की जीत थी। इस अनुभव ने मुझे सिखाया कि जब हम अपने डर का सामना करते हैं और अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ते हैं, तो हम कुछ भी हासिल कर सकते हैं।

मेरी कंपनी के समर्थन ने मुझे इस मैराथन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। उनके समर्थन ने मुझे यह महसूस कराया कि मैं अकेला नहीं हूं, और मेरे साथ एक टीम है जो मेरा साथ दे रही है। अनुभवी बुजुर्गों का साथ भी बहुत महत्वपूर्ण था, जिन्होंने अपने अनुभव और ज्ञान से मुझे मार्गदर्शन किया।

इस मैराथन ने मुझे सिखाया कि उम्र कोई बाधा नहीं है, और यदि हम अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ते हैं तो हम कुछ भी हासिल कर सकते हैं। मैं अपनी कंपनी और साथी धावकों का आभारी हूं, जिन्होंने मुझे इस अनुभव को पूरा करने में मदद की। मैं अपनी अगली मैराथन के लिए तैयार हूं, और मुझे पता है कि मैं इसे भी पूरा कर सकता हूं।

मनोज कुमार गुप्ता
प्रबंधक (प्रशासन)

इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉरपोरेशन
(रेल मंत्रालय का नवरत्न उपक्रम)
भविष्य पथ पर

आईआरएफसी के इतिहास में पहली बार कार्मिकों द्वारा दिल्ली वेदांता हाफ मैराथॉन में प्रतिभागिता की झलकियां

(दिनांक: 12.10.2025)













होली

रंग बिरंगी होली आई,
खुशियों की है बजी शहनाई...
लाल, हरा, गुलाबी रंग,
हर दिल भर दे नई उमंग...
भारतीय संस्कृति की शान है होली,
सनातन की पहचान है होली...
आशा और उत्साह का पर्व,
हम सबको है इस पर गर्व...
आओ नवयुग का करें आगाज,
नए तरीके से करें होली की शुरुआत...
बोझिल कुंठित जीवन में हास्य,
परिहास का रंग भर दें...
रंगों की खुशबू से महके हर आंगन,
होलिका दहन में कर दें हर गम का दहन...
निराशाओं के बादल को,
आशा की किरणों से जगमग कर दें
किसी दुखी मन पर खुशी का मरहम रख दें
रोती हुई आंखों में सपनों के नए रंग भर दें
रंगों की खुशबू से महके हर घर संसार,
करुणा और ममता हो हम सब के जीवन का आधार...
सारे गिले शिकवे भुला दुश्मन को भी गले लगा लें,
चारों ओर प्रेम और स्नेह की गंगा बहा दें...
नई ऊर्जा, नए जोश से संगठन को मिली है नई उड़ान,
आईआरएफसी को मिली नवरत्न की पहचान...
यह सफलता यूं ही बढ़ती रहे,
करती हूं ईश्वर से यह कामना,
आप सबको होली की हार्दिक शुभकामना।

ज्योति श्रीवास्तव
पत्नी श्री रमेश कुमार
प्रबंधक (प्रशासन)

तीसरी बकरी

रोहित और मोहित बड़े शरारती बच्चे थे, दोनों 5वीं स्टैण्डर्ड के स्टूडेंट थे और एक साथ ही स्कूल आया-जाया करते थे। एक दिन जब स्कूल की छुट्टी हो गयी तब मोहित ने रोहित से कहा, "दोस्त, मेरे दिमाग में एक आईडिया है?" "बताओ-बताओ...क्या आईडिया है?", रोहित ने एक्साईटेड होते हुए पूछा।

मोहित – "वो देखो, सामने तीन बकरियां चर रही हैं।"

रोहित – "तो! इनसे हमे क्या लेना-देना है?"

मोहित – "हम आज सबसे अंत में स्कूल से निकलेंगे और जाने से पहले इन बकरियों को पकड़ कर स्कूल में छोड़ देंगे, कल जब स्कूल खुलेगा तब सभी इन्हें खोजने में अपना समय बर्बाद करेगे और हमें पढाई नहीं करनी पड़ेगी..."

रोहित – "पर इतनी बड़ी बकरियां खोजना कोई कठिन काम थोड़े ही है, कुछ ही समय में ये मिल जायेंगी और फिर सब कुछ नार्मल हो जाएगा..."

मोहित – "हाहाहा...यही तो बात है, वे बकरियां आसानी से नहीं ढूंढ पायेंगे, बस तुम देखते जाओ मैं क्या करता हूँ!"

इसके बाद दोनों दोस्त छुट्टी के बाद भी पढ़ाई के बहाने अपनी क्लास में बैठे रहे और जब सभी लोग चले गए तो ये तीनों बकरियों को पकड़ कर क्लास के अन्दर ले आये।

अन्दर लाकर दोनों दोस्तों ने बकरियों की पीठ पर काले रंग का गोला बना दिया। इसके बाद मोहित बोला, "अब मैं इन बकरियों पे नंबर डाल देता हूँ। और उसने सफेद रंग से नंबर लिखने शुरू किये-

पहली बकरी पे नंबर 1
दूसरी पे नंबर 2
और तीसरी पे नंबर 4

"ये क्या? तुमने तीसरी बकरी पे नंबर 4 क्यों डाल दिया?", रोहित ने आश्चर्य से पूछा।

मोहित हंसते हुए बोला, "दोस्त यही तो मेरा आईडिया है, अब कल देखना सभी तीसरे नंबर की बकरी ढूँढने में पूरा दिन निकाल देंगे...और वो कभी मिलेगी ही नहीं..."

अगले दिन दोनों दोस्त समय से कुछ पहले ही स्कूल पहुँच गए। थोड़ी ही देर में स्कूल के अन्दर बकरियों के होने का शोर मच गया। कोई चिल्ला रहा था, "चार बकरियां हैं, पहले, दूसरे और चौथे नंबर की बकरियां तो आसानी से मिल गयीं...बस तीसरे नंबर वाली को ढूँढना बाकी है।"

स्कूल का सारा स्टाफ तीसरे नंबर की बकरी ढूढने में लगा गया...एक-एक क्लास में टीचर गए अच्छे से तलाशी ली। कुछ खोजू वीर स्कूल की छतों पर भी बकरी ढूंढते देखे गए...कई सीनियर बच्चों को भी इस काम में लगा दिया गया। तीसरी बकरी ढूँढने का बहुत प्रयास किया गया...पर बकरी तब तो मिलती जब वो होती...बकरी तो थी ही नहीं! आज सभी परेशान थे पर रोहित और मोहित इतने खुश पहले कभी नहीं हुए थे। आज उन्होंने अपनी चालाकी से एक बकरी अदृश्य कर दी थी। इस कहानी को पढ़कर चेहरे पे हलकी सी मुस्कान आना स्वाभाविक है। पर इस मुस्कान के साथ-साथ हमें इसमें छिपे सन्देश को भी ज़रूर समझना चाहिए। तीसरी बकरी, दरअसल वो चीजें हैं जिन्हें खोजने के लिए हम बेचैन हैं पर वो हमें कभी मिलती ही नहीं...क्योंकि वे reality में होती ही नहीं!

हम ऐसी लाइफ चाहते हैं जो perfect हो, जिसमे कोई problem ही ना हो...it does not exist!

हम ऐसा life-partner चाहते हैं जो हमें पूरी तरह समझे जिसके साथ कभी हमारी अनबन ना हो...it does not exist!

हम ऐसी job या बिजनेस चाहते हैं, जिसमे हमेशा सबकुछ एकदम smoothly चलता रहे…it does not exist!

क्या ज़रूरी है कि हर वक़्त किसी चीज के लिए परेशान रहा जाए? ये भी तो हो सकता है कि हमारी लाइफ में जो कुछ भी है वही हमारे life puzzle को solve करने के लिए पर्याप्त हो...ये भी तो हो सकता है कि जिस तीसरी चीज की हम तलाश कर रहे हैं वो हकीकत में हो ही ना...और हम पहले से ही complete हों...!!

रूपल जैन
प्रबंधक (वित्त)

इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉरपोरेशन
(रेल मंत्रालय का नवरत्न उपक्रम)
भविष्य पथ पर

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 के उपलक्ष्य में ओक ग्रोव विद्यालय, मसूरी में आयोजित पोस्टर प्रतियोगिता की झलकियाँ

(दिनांक 28.10.2025)















इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित साइबर सुरक्षा जागरूकता एवं सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 की झलकियाँ
(दिनांक 28.10.2025)

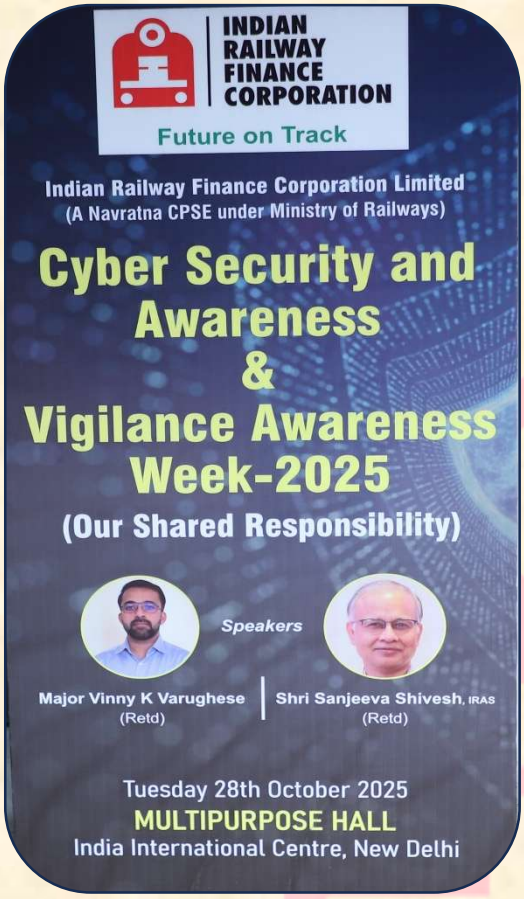








INDIAN
RAILWAY
FINANCE
CORPORATION
Future on Track





अलविदा 2025

ढेर सारी 2025 की उठा पटक के बाद आखिर वो समय आ ही गया जब हम उस पड़ाव पर खड़े हो गए जब हमें इस वर्ष को अलविदा कह कर 2026 का स्वागत करना होगा।

2025 सिर्फ एक वर्ष नहीं है बल्कि बहुत सारी खट्टी-मिठी यादों का साल है, या कहें मीठी कम खट्टी ज़्यादा।

कुछ सिखाके, कुछ रुलाके, कुछ समझाके, कुछ हंसा के अंत में इसका भी सुखद अंत हो ही गया।

इस वर्ष की कुछ दुखद यादों की बात करें तो "भारत के संदर्भ" में प्रयागराज में जनवरी महाकुंभ के दौरान हुई भगदड़ में कई मौत और सैकड़ों घायल हुए, अभी उस हादसे से पूरी तरह उभर भी नहीं पाया था भारत कि एक और दुर्घटना ने देश को झकझौर कर रख दिया जब नई दिल्ली में ट्रेन के लेट होने की आफवाह के चलते प्लेटफॉर्म पर हुई भगदड़ में दर्जनों की मौत हुई।

दुख यहाँ खत्म नहीं हुआ अभी और घाव देश के लिए बाकी थे। फिर अप्रैल में पहलगाम में आतंकवादियों द्वारा पर्यटकों पर अंधाधुंध गोली बारी हुई जिस निंदनीय दुर्घटना में कई लोगों की मौत हुई।

इन मौतों का सिलसिला यूँही जारी रहा। फिर एक खबर ने देश को हिला दिया, कि RCB की जीत के जश्न के दौरान बेंगलुरु स्डेडियम में भगदड़ मच गई और एक बार फिर दर्जन भर बेगुनाह लोग मौत की बलि चढ़ गए।

फिर आया वो दिन जिसने न केवल भारत को पूरी दुनिया को हिला दिया। 12 जून अहमदाबाद से लंदन जा रही फ़्लाइट टेक ऑफ के तुरंत बाद क्रैश हो गई और विमान में सवार तथा मौके पर जमीन पर मौजूद करीब 250 लोगों की दुखद मृत्यु हो गई।

मौत का तांडव वर्ष भर ऐसे ही चलता रहा जिसमें मुंबई लोकल ट्रेन हादसा हो या, उत्तराखंड में बादल फटना देश का नुकसान लगातार चलता ही जा रहा था। हद तो तब हो गई जब एक बार फिर आतंकवादियों ने देश की सुरक्षा में सेंध लगाते हुए राजधानी के रेड फोर्ट इलाके में एक बम धमाके को अंजाम दिया और दर्जनों निर्दोष लोगों को मौत के घाट उतार दिया।

ये सब तो मानव निर्मित घटनाऐं थी जिसमें सैकड़ों जाने गई। पर प्रकृति ने अपनी पूरी नाराज़गी इस वर्ष में दिखाई, जिसमें भीषण बाढ़, भूस्खलन, बादल फटने, तूफान जैसी प्राकृतिक आपदाऐं भारत को 2025 में सहनी पड़ी। उत्तराखंड के उत्तरकाशी की बाढ़ हो या पंजाब राज्य की बाढ़ हो जिससे हजारों लोगों के जीवन को प्रभावित किया। समय लगा, कोशिशें लगीं पर जीवन फिर से सामान्य होने लगा।

इतनी सारी समस्याओं के बाद भी इस वर्ष ने बहुत कुछ अच्छी यादें भी दी हैं। खासतौर पर देश के विकास में फिर चाहे वो AI हो, विनिर्माण का क्षेत्र हो, नवीकरणीय उर्जा का क्षेत्र हो, स्वास्थ सेवाएं हो या ई-कॉमर्स डिजिटल, सेवाएं इन सभी क्षेत्रों में भारत ने दुनिया में अपना परचम लहराया।

संक्षेप में कहा जाए तो 2025 में भले ही प्राकृतिक और मानवीय आपदाओं से देश त्रस्त रहा, इन सब के बावजूद विकास की गति का पहिया अपनी गति से चलता रहा और देश आगे बढ़ता रहा। आखिर बढ़ते-बढ़ते बहुत उतार चढ़ावो के साथ 2025 को अलविदा कहने तक पहुँच गया।

और आखिर में खुशी से एक बार फिर खड़े है हम अपने दरवाजे पर 2026 के स्वागत में इस उम्मीद से कि यह, वर्ष पिछले वर्ष की सारी कड़वी यादों को ज़हन से मिटा दे और खुशियों से भारत माँ के आँगन को भर दे।

क्षमा जैन
पत्नी श्री सचिन कुमार जैन
प्रबंधक (वित्त)

पहला सुख निरोगी काया

स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन है क्योंकि अच्छे स्वास्थ्य के बिना जीवन की सभी सुख सुविधा और सफलताएं अधूरी रह जाती हैं। स्वास्थ्य का मतलब बस बीमार नहीं होना ही नहीं होता अपितु स्वस्थ रहने का यह अर्थ होता है कि हम अपने जीवन में आने वाली सभी सामाजिक, शारीरिक और भावनात्मक चुनौतियों का प्रबंधन करने में सफलतापूर्वक सक्षम हैं।

आज की भाग दौड़ भरी जिंदगी में हम अक्सर सफलता और काम के पीछे भागते हुए अपने स्वास्थ्य को पीछे छोड़ देते हैं। खराब खानपान, लगातार स्क्रीन के सामने बैठना और तनाव हमारी रोजमर्रा की जिंदगी का एक हिस्सा बन चुके हैं। कुछ आसान और प्रभावी नियम अपना कर हम स्वस्थ और ऊर्जावान जीवन जी सकते हैं। हमें अपनी डाइट को संतुलित बनाना चाहिए। इसके लिए हमें अपने भोजन में हरी सब्जियां, मौसमी फल, साबुत अनाज और प्रोटीन को शामिल करना होगा। पैकेट बंद चिप्स, कोल्ड ड्रिंक और अत्यधिक चीनी वाले खाद्य पदार्थों से परहेज करना होगा।

यह भी सत्य है कि हम काम की व्यस्तता में पानी पीना भूल जाते हैं। शरीर में पानी की कमी होने से सिर दर्द, तनाव और पाचन की समस्याएं हो सकती हैं। इसलिए हमें दिन में काम से कम 8 से 10 ग्लास पानी जरूर पीना चाहिए। गर्मियों के मौसम में हमें नारियल पानी, नींबू पानी या छाछ का भी नियमित रूप से सेवन करना चाहिए। शारीरिक रूप से सक्रिय रहना ही स्वस्थ जीवन की तरफ एक बहुत महत्वपूर्ण कदम है। हमें लिफ्ट की जगह सीढ़ियों का इस्तेमाल करना चाहिए और लगातार एक ही जगह पर बैठे रहने की जगह हर एक घंटे के बाद 5 मिनट का वॉक लेना चाहिए। एक अच्छी सेहत के लिए जरूरी डाइट के साथ-साथ अच्छी नींद लेना भी बहुत जरूरी है ताकि हमारी प्रतिरोधक क्षमता कमजोर ना हो रात को सोने से पहले कम से कम एक घंटा पहले मोबाइल और लैपटॉप बंद कर देना चाहिए। सोने का एक निश्चित समय तय करें ताकि शरीर का नेचुरल क्लॉक सही रहे। शारीरिक रूप से स्वस्थ रहने के साथ-साथ हमें मानसिक रूप से भी स्वस्थ रहना अत्यंत आवश्यक है।

तनाव कम करने के लिए रोजाना 10 मिनट का ध्यान या गहरी सांस लेने का अभ्यास करना चाहिए। जैसी इच्छा हो जैसे संगीत सुनना, गार्डनिंग या किताबें पढ़ने उसके लिए समय निकालना चाहिए। अपने दोस्तों और परिवारों के साथ क्वालिटी टाइम बिताना चाहिए। हम अपने जीवन शैली में छोटे-छोटे बदलाव लेकर एक स्वस्थ और सुरक्षित जीवन जी सकते हैं। 21वीं सदी विज्ञान, तकनीक और सुख सुविधाओं की सदी है। आज हमारे पास हर वह साधन मौजूद है जो जीवन को आसान बनाता है।

लेकिन इस तकनीकी प्रगति की एक भारी कीमत हमारा शरीर चुका रहा है। मोबाइल और कंप्यूटर पर लंबे समय तक बैठे रहना, प्रोसैस्ड फूड की अधिकता और लगातार रहने वाला मानसिक तनाव आज की पीढ़ी को समय से पहले ही बूढ़ा और बीमार बना रहा है। आज विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार दुनिया में सबसे ज्यादा मृत्यु संक्रामक बीमारियों से नहीं बल्कि जीवन शैली से जुड़ी बीमारियों के कारण हो रही है। आधुनिक आहार में कैलोरी तो भरपूर है लेकिन पोषण गायब है। आधुनिक जीवन तथा मल्टीनेशनल कंपनियों में कार्य प्रणाली, संयुक्त परिवारों का समाप्त होते जाना हमारे मानसिक तनाव को बहुत ज्यादा बढ़ा रहा है।

रिफाइंड और प्रोसेस्ड फूड के मायाजाल से आज के बच्चे मुक्त नहीं हो पा रहे हैं। घर का संतुलित, सादा और स्वस्थ आहार उन्हें पसंद नहीं आता। एंग्जायटी, डिप्रैशन और क्रॉनिक स्ट्रेस आज हर दूसरे व्यक्ति की समस्या बनता जा रहा है। जब हम लगातार तनाव में ही रहते हैं तो हमारे शरीर में स्ट्रेस हार्मोन का स्तर बढ़ जाता

है जिससे हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता बुरी तरह प्रभावित होती है और हमारा शरीर किसी भी बीमारी से लड़ने में असमर्थ हो जाता है।

सोशल मीडिया व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, फेसबुक जैसी चीजों ने हमारी शारीरिक सक्रियता पर बहुत नकारात्मक प्रभाव डाला है। इससे हमारा निद्रा चक्र भी प्रभावित हुआ है। स्वस्थ रहने के लिए यह आवश्यक है कि हम दिन में कम से कम 2 घंटे का "नो फोन टाइम" रखें। सुबह उठते और रात को सोने से पहले मोबाइल से दूरी बनाए रखें। ध्यान और प्राणायाम को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाएं। कहावत है कि इलाज से बेहतर है रोकथाम। इसके हमें नियमित हेल्थ चेकअप की भी जरूरत है। 30 वर्ष की उम्र के बाद हर व्यक्ति को साल में कम से कम एक बार ब्लड प्रेशर ब्लड शुगर लिक्विड प्रोफाइल और किडनी लिवर फंक्शन टेस्ट आदि जरूर करवाने चाहिए स्वास्थ्य बहुत ही अनमोल है। इसकी मेहता तब हमें महसूस होती है जब हम बीमार हो चुके होते हैं, बहुत सारी धन दौलत होने के बावजूद भी स्वास्थ्य अगर आपके पास नहीं है तो आप सबसे गरीब व्यक्ति हैं।

अपनी दिनचर्या में छोटे-छोटे बदलाव लाकर हम अपने स्वास्थ्य का पूरा-पूरा ध्यान रख सकते हैं। एक अस्वस्थ शरीर में दुनिया की सारी दौलत और कामयाबी बेकार महसूस होती है, इसलिए स्वस्थ रहें, सचेत रहें और समृद्ध रहें। फ्रांसिस बेकन ने कहा है कि "एक बीमार शरीर आत्मा के लिए जेल की तरह है जबकि एक स्वस्थ शरीर उसके लिए एक सुंदर महल है"। इसलिए "पहला सुख निरोगी काया, दूजा सुख घर में हो माया"। हम सब प्रण लें कि हम अपने स्वास्थ्य का पूरा-पूरा ध्यान रखेंगे। इसके लिए सिर्फ छोटे-छोटे बदलावों और एक संकल्प की आवश्यकता है।

उपमा कक्कड़
पत्नी श्री अजय कक्कड़
सहायक प्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन)

1. हे भव्य भारत ही हमारी मातृभूमि हरी भरी। हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि है नागरी। - मैथिलीशरण गुप्त
2. जिस देश को भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता। - डॉ. राजेंद्र प्रसाद
3. हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है। - मैथिलीशरण गुप्त

वर्क फ्रॉम होम: फायदे और चुनौतियाँ

तेजी से बदलती आधुनिक कार्य संस्कृति में **"वर्क फ्रॉम होम"** एक महत्वपूर्ण और लोकप्रिय व्यवस्था बन चुकी है। पहले जहाँ ऑफिस जाकर काम करना ही सामान्य माना जाता था, वहीं आज तकनीक और इंटरनेट की सहायता से लोग अपने घर से ही सफलतापूर्वक कार्य कर रहे हैं। विशेष रूप से कोविड-19 महामारी के दौरान इस व्यवस्था ने पूरी दुनिया में काम करने के तरीके को बदल दिया। आज कई कंपनियाँ अपने कर्मचारियों को स्थायी या आंशिक रूप से घर से काम करने की सुविधा प्रदान कर रही हैं।

वर्क फ्रॉम होम केवल एक सुविधा नहीं, बल्कि कार्य संस्कृति में आया एक बड़ा परिवर्तन है। इसके अनेक फायदे हैं, लेकिन इसके साथ कुछ चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं, जिन्हें समझना आवश्यक है।

वर्क फ्रॉम होम के प्रमुख फायदे

क. समय, ऊर्जा और ईंधन की बचत

ऑफिस आने-जाने में कर्मचारियों का काफी समय और ऊर्जा खर्च होती है। बड़े शहरों में ट्रैफिक की समस्या के कारण लोगों को रोज़ाना लंबी दूरी तय करनी पड़ती है, जिससे पेट्रोल और अन्य ईंधन पर भी अधिक खर्च होता है। वर्क फ्रॉम होम के कारण यात्रा की आवश्यकता कम हो जाती है, जिससे न केवल समय और पैसे की बचत होती है, बल्कि ईंधन की खपत कम होने से पर्यावरण संरक्षण में भी मदद मिलती है। कर्मचारी अपना बचाया हुआ समय अधिक उपयोगी कार्यों और परिवार के साथ बिता सकते हैं।

ख. कार्य और निजी जीवन में संतुलन

घर से काम करने पर व्यक्ति अपने परिवार के साथ अधिक समय बिता सकता है। इससे कार्य और व्यक्तिगत जीवन के बीच संतुलन बनाना आसान हो जाता है। विशेष रूप से महिलाओं और छोटे बच्चों के माता-पिता के लिए यह व्यवस्था काफी लाभदायक साबित हुई है।

ग. मानसिक तनाव में कमी

प्रतिदिन की भागदौड़, ट्रैफिक और समय पर ऑफिस पहुँचने का दबाव मानसिक तनाव बढ़ाता है। घर का आरामदायक वातावरण कर्मचारियों को अधिक शांत और सहज महसूस कराता है, जिससे तनाव कम हो सकता है।

घ. उत्पादकता में सुधार

कई लोग घर के शांत वातावरण में अधिक ध्यान केंद्रित करके काम कर पाते हैं। बार-बार होने वाली ऑफिस मीटिंग्स या अनावश्यक व्यवधान कम होने से कार्य की गुणवत्ता और उत्पादकता में सुधार देखा गया है।

ङ. कंपनियों के लिए लाभ

वर्क फ्रॉम होम केवल कर्मचारियों के लिए ही नहीं, बल्कि कंपनियों के लिए भी लाभदायक है। इससे ऑफिस स्पेस, बिजली, रखरखाव और अन्य खर्चों में कमी आती है। कंपनियाँ अलग-अलग शहरों और राज्यों से प्रतिभाशाली कर्मचारियों को नियुक्त कर सकती हैं।

वर्क फ्रॉम होम की चुनौतियाँ

च. अनुशासन और समय प्रबंधन की समस्या

घर का वातावरण हमेशा कार्य के अनुकूल नहीं होता। कई बार घरेलू जिम्मेदारियाँ, मोबाइल फोन, टीवी या अन्य गतिविधियाँ ध्यान भटका सकती हैं। ऐसे में समय प्रबंधन और आत्म-अनुशासन बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है।

छ. सामाजिक संपर्क में कमी

ऑफिस में सहकर्मियों के साथ बातचीत, टीमवर्क और सामूहिक वातावरण कार्य को रोचक बनाते हैं। वर्क फ्रॉम होम में यह सामाजिक जुड़ाव कम हो जाता है, जिससे कई लोगों को अकेलापन महसूस हो सकता है।

ज. काम और निजी जीवन की सीमाएँ समाप्त होना

घर और ऑफिस एक ही स्थान होने के कारण कई बार कर्मचारी तय समय से अधिक काम करने लगते हैं। इससे कार्य और निजी जीवन के बीच की सीमाएँ धुंधली हो जाती हैं, जो मानसिक थकान और तनाव का कारण बन सकती हैं।

झ. तकनीकी समस्याएँ

वर्क फ्रॉम होम पूरी तरह तकनीक पर निर्भर करता है। इंटरनेट कनेक्शन की समस्या, बिजली कटना या तकनीकी खराबी काम को प्रभावित कर सकती है। हर व्यक्ति के पास घर में उचित कार्यस्थल और आवश्यक संसाधन उपलब्ध हों, यह भी जरूरी नहीं है।

ञ. स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ

लंबे समय तक घर में बैठकर काम करने से शारीरिक गतिविधि कम हो जाती है। इससे आँखों में तनाव, पीठ दर्द, मोटापा और अन्य स्वास्थ्य समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। इसलिए नियमित व्यायाम और सही दिनचर्या अपनाना आवश्यक है।

भविष्य की कार्य संस्कृति

आज कई कंपनियाँ "हाइब्रिड वर्क मॉडल" अपना रही हैं, जिसमें कर्मचारी कुछ दिन ऑफिस और कुछ दिन घर से काम करते हैं। यह मॉडल दोनों व्यवस्थाओं के फायदे प्रदान करता है। भविष्य में तकनीक के और अधिक विकसित होने के साथ वर्क फ्रॉम होम की संस्कृति और मजबूत हो सकती है।

निष्कर्ष

वर्क फ्रॉम होम आधुनिक युग की एक प्रभावशाली कार्य प्रणाली है, जिसने कार्य करने के तरीके को नई दिशा दी है। इसके अनेक लाभ हैं, जैसे समय की बचत, लचीलापन और बेहतर कार्य-जीवन संतुलन। वहीं अनुशासन की कमी, सामाजिक दूरी और स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियाँ भी इसके महत्वपूर्ण पहलू हैं।
यदि सही योजना, समय प्रबंधन और संतुलित दिनचर्या अपनाई जाए, तो वर्क फ्रॉम होम कर्मचारियों और कंपनियों दोनों के लिए अत्यंत लाभदायक साबित हो सकता है। बदलते समय के साथ यह व्यवस्था भविष्य की कार्य संस्कृति का एक स्थायी हिस्सा बनती जा रही है।

साक्षी सैनी
सहायक प्रबंधक (वित्त)

हिंदी हमारे देश और भाषा की प्रभावशाली विरासत है। - माखनलाल चतुर्वेदी

इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉरपोरेशन
(रेल मंत्रालय का नवरत्न उपक्रम)
भविष्य पथ पर

आईआरएफसी द्वारा भारत के समुद्री अवसंरचना एवं बंदरगाह संपर्क को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से किए गए दो समझौता ज्ञापनों की झलकियां (दिनांक: 05.11.2025)





देसी, परंपरागत एवं स्वादिष्ट मिठाई: लौंग लता

भारत की पारंपरिक मिठाइयों की दुनिया जितनी विशाल है, उतनी ही विविधतापूर्ण भी। हर प्रदेश की अपनी अलग मिठास, अपनी अलग खुशबू और अपनी अलग पहचान होती है। इन्हीं पारंपरिक मिठाइयों में एक विशेष नाम है – **लौंग लता**। यह मिठाई केवल स्वाद का अनुभव नहीं कराती, बल्कि भारतीय संस्कृति, परंपरा और घरेलू रसोई की मिठास को भी जीवंत कर देती है। उत्तर भारत, विशेषकर उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश के कई हिस्सों में यह मिठाई वर्षों से लोगों की पसंद बनी हुई है।

लौंग लता की विशेष पहचान

लौंग लता एक ऐसी पारंपरिक मिठाई है जो अपने अनोखे आकार, कुरकुरे स्वाद और सुगंधित मिठास के कारण बेहद लोकप्रिय है। इसका बाहरी हिस्सा मैदे से तैयार किया जाता है, जबकि अंदर खोया, मेवा और इलायची से बनी स्वादिष्ट भरावन भरी जाती है। इसे खास तरीके से मोड़कर ऊपर से एक लौंग लगाई जाती है, जिससे इसका नाम "लौंग लता" पड़ा।

जब इसे धीमी आँच पर घी में तला जाता है, तो इसकी सुनहरी परत और अंदर की नरम मिठास हर किसी का मन मोह लेती है। बाद में इसे चीनी की चाशनी में डुबोया जाता है, जिससे इसका स्वाद और भी लाजवाब हो जाता है। एक बार खाने के बाद इसका स्वाद लंबे समय तक याद रहता है।

परंपरा और संस्कृति से जुड़ी मिठाई

भारतीय परिवारों में त्योहारों और शुभ अवसरों पर विशेष पकवान बनाने की परंपरा रही है। लौंग लता भी ऐसी ही मिठाइयों में शामिल है, जिसे विशेष रूप से दीपावली, होली, रक्षाबंधन, विवाह समारोह और अन्य पारिवारिक उत्सवों में बनाया जाता है।

पहले के समय में घरों की महिलाएँ मिलकर इसे बनाती थीं। परिवार के सभी सदस्य रसोई में एकत्र होकर इसकी तैयारी में सहयोग करते थे। यही कारण है कि लौंग लता केवल मिठाई नहीं, बल्कि परिवार और रिश्तों की मिठास का प्रतीक भी मानी जाती है।



स्वाद और सुगंध का अद्भुत संगम

लौंग लता की सबसे बड़ी खासियत इसका अनोखा स्वाद है। बाहर से कुरकुरी और अंदर से मुलायम यह मिठाई हर उम्र के लोगों को पसंद आती है। इसमें प्रयुक्त लौंग न केवल स्वाद को बढ़ाती है, बल्कि इसकी खुशबू भी बेहद आकर्षक बनाती है।

खोया, काजू, बादाम, नारियल और इलायची का मिश्रण इसकी भरावन को बेहद समृद्ध बनाता है। वहीं, चाशनी की मिठास और घी की सुगंध इसे और अधिक स्वादिष्ट बना देती है। कुछ स्थानों पर इसमें केसर और पिस्ता भी डाला जाता है, जिससे इसका स्वाद और अधिक शाही हो जाता है।

आधुनिक दौर में भी कायम लोकप्रियता

आज के समय में जब लोग फास्ट फूड और आधुनिक डेज़र्ट की ओर आकर्षित हो रहे हैं, तब भी लौंग लता की लोकप्रियता कम नहीं हुई है। मिठाई की दुकानों में यह विशेष रूप से त्यौहारों के समय खूब बिकती है। कई लोग इसे उपहार के रूप में भी देना पसंद करते हैं, क्योंकि यह पारंपरिकता और स्वाद दोनों का सुंदर मेल है।

आजकल लौंग लता के कई नए रूप भी देखने को मिल रहे हैं। कुछ दुकानों में चॉकलेट लौंग लता, ड्राई फ्रूट लौंग लता और शुगर-फ्री लौंग लता जैसी आधुनिक वैरायटी भी उपलब्ध हैं। हालांकि, पारंपरिक देसी घी में बनी लौंग लता का स्वाद आज भी सबसे अलग और खास माना जाता है।

स्वास्थ्य और आयुर्वेदिक महत्व

लौंग लता में प्रयुक्त लौंग केवल स्वाद के लिए ही नहीं, बल्कि स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी मानी जाती है। आयुर्वेद में लौंग को पाचन सुधारने, सर्दी-जुकाम से राहत देने और शरीर में ऊर्जा बढ़ाने वाला माना गया है। वहीं, मेवा और खोया शरीर को पोषण और ताकत प्रदान करते हैं।

हालाँकि यह मिठाई काफी मीठी और घी से भरपूर होती है, इसलिए इसका सेवन संतुलित मात्रा में करना ही उचित माना जाता है। त्योहारों और विशेष अवसरों पर इसका आनंद लेना भारतीय खानपान संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

लौंग लता केवल एक मिठाई नहीं, बल्कि भारतीय परंपरा, संस्कृति और स्वाद का सुंदर प्रतीक है। इसकी मिठास में घरेलू प्रेम, त्योहारों की खुशी और भारतीय रसोई की आत्मीयता छिपी होती है। बदलते समय के बावजूद इसकी लोकप्रियता यह साबित करती है कि पारंपरिक स्वाद कभी पुराने नहीं होते।

जब भी कोई गरमागरम और चाशनी में डूबी हुई लौंग लता सामने आती है, तो उसका स्वाद मन को तुरंत खुशियों से भर देता है। यही कारण है कि यह मिठाई आज भी भारतीयों के दिलों में विशेष स्थान रखती है और आने वाली पीढ़ियों तक अपनी मिठास फैलाती रहेगी।

सतीश चंद्र श्रीवास्तव
कनिष्ठ प्रबंधक (प्रशासन)

ग्रीन बिजनेस की ओर बढ़ते कदम

आज के समय में पर्यावरण संरक्षण केवल सरकारों या सामाजिक संगठनों की जिम्मेदारी नहीं रह गई है, बल्कि कंपनियों और उद्योगों की भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका है। बढ़ते प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों की कमी ने कॉर्पोरेट जगत को "ग्रीन बिजनेस" की ओर कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित किया है। अब कंपनियां केवल लाभ कमाने तक सीमित नहीं हैं, बल्कि पर्यावरणीय स्थिरता को भी अपनी कार्यशैली का महत्वपूर्ण हिस्सा बना रही हैं।

ग्रीन बिजनेस का अर्थ ऐसे व्यावसायिक मॉडल से है, जिसमें पर्यावरण को कम से कम नुकसान पहुंचाते हुए उत्पादन और सेवाएं प्रदान की जाती हैं। इसके अंतर्गत ऊर्जा की बचत, नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग, कचरे का पुनर्चक्रण, जल संरक्षण और कार्बन उत्सर्जन में कमी जैसे प्रयास शामिल हैं। आज कई कंपनियां अपने कार्यालयों और उद्योगों में सौर ऊर्जा, पेपरलेस कार्य प्रणाली तथा ई-वाहनों का उपयोग बढ़ा रही हैं।

कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) के अंतर्गत भी कंपनियां पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान और जागरूकता कार्यक्रम चला रही हैं। इससे न केवल पर्यावरण को लाभ पहुंचता है, बल्कि कंपनियों की सामाजिक छवि भी मजबूत होती है। उपभोक्ता भी अब उन कंपनियों को अधिक महत्व देते हैं, जो पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार रवैया अपनाती हैं।

इसी दिशा में इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉर्पोरेशन (आईआरएफसी) भी पर्यावरणीय स्थिरता और हरित विकास को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न पहल कर रहा है। आईआरएफसी द्वारा कार्यालयों में पेपरलेस कार्य प्रणाली को प्रोत्साहित किया जा रहा है, जिससे कागज की खपत में कमी लाई जा सके। ऊर्जा संरक्षण के उद्देश्य से ऊर्जा दक्ष उपकरणों का उपयोग बढ़ाया जा रहा है तथा डिजिटल प्रक्रियाओं को अपनाकर संसाधनों के बेहतर उपयोग पर बल दिया जा रहा है।

इसके अतिरिक्त, सीएसआर गतिविधियों के अंतर्गत आईआरएफसी समय-समय पर वृक्षारोपण अभियान, स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम तथा पर्यावरण संरक्षण से जुड़े सामाजिक अभियानों में भागीदारी करता है। आईआरएफसी ने अपने सीएसआर फंड के माध्यम से विभिन्न रेलवे स्टेशनों पर सौर ऊर्जा परियोजनाओं को भी समर्थन दिया है। अजमेर मंडल के कई रेलवे स्टेशनों पर सोलर पैनल स्थापित किए गए, जिनसे हरित ऊर्जा उत्पादन को बढ़ावा मिला तथा कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने में सहायता मिली। इन सोलर पैनलों के माध्यम से रेलवे परिसरों में बिजली की आवश्यकता को पर्यावरण-अनुकूल तरीके से पूरा किया जा रहा है।

इसके साथ ही, आईआरएफसी रेलवे क्षेत्र में रूफटॉप सोलर, ऊर्जा दक्ष तकनीकों तथा नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं को बढ़ावा देने में भी सहयोग कर रहा है। संस्था भारतीय रेल के "नेट ज़ीरो कार्बन उत्सर्जन" लक्ष्य की दिशा में हरित अवसंरचना और स्वच्छ ऊर्जा आधारित परियोजनाओं के वित्तपोषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। रेलवे, जो स्वयं ऊर्जा दक्ष और पर्यावरण के अनुकूल परिवहन का माध्यम है, उसके वित्तपोषण में आईआरएफसी की भूमिका अप्रत्यक्ष रूप से कार्बन उत्सर्जन कम करने में सहायक बनती है।

ग्रीन बिजनेस अपनाने से आर्थिक लाभ भी प्राप्त होते हैं। ऊर्जा की बचत और संसाधनों के सही उपयोग से लागत में कमी आती है। साथ ही, यह भविष्य की पीढ़ियों के लिए सुरक्षित और स्वच्छ वातावरण सुनिश्चित करने में मदद करता है।

अंततः, पर्यावरणीय स्थिरता की दिशा में बढ़ते कदम केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि समय की आवश्यकता हैं। यदि कंपनियां, सरकार और समाज मिलकर प्रयास करें, तो एक हरित, स्वच्छ और सुरक्षित भविष्य का निर्माण संभव है।

प्रीति रानी
सहायक (मानव संसाधन एवं प्रशासन)

1. हिंदी भाषा और हिंदी साहित्य को सर्वांगसुंदर बनाना हमारा कर्तव्य है। - डॉ राजेंद्रप्रसाद
2. हिन्दी भारतीय संस्कृति की आत्मा है। - कमलापति त्रिपाठी।
3. निज भाषा उन्नति अहै,सब उन्नति को मूल, बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को सूल। - भारतेन्दु हरिशचंद
4. हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है। - सुमित्रानंदन पंत

इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉरपोरेशन
(रेल मंत्रालय का नवरत्न उपक्रम)
भविष्य पथ पर

आईआरएफसी के अधिकारियों की लोक उद्यम विभाग द्वारा आयोजित इंडस्ट्री 4.0 विषयक कार्यशाला में सहभागिता की झलकियां

(दिनांक: 11.11.2025)





आईआरएफसी में तीन वर्षों का सफर: सीख, समर्पण और विकास की कहानी

किसी भी संस्थान में कार्य करना केवल नौकरी करना नहीं होता, बल्कि वह एक ऐसा अनुभव होता है जो व्यक्ति के व्यक्तित्व, कार्यशैली और सोच को नई दिशा देता है। इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉर्पोरेशन (आईआरएफसी) में बिताए गए तीन वर्ष मेरे लिए केवल सेवा अवधि नहीं, बल्कि सीख, जिम्मेदारी, आत्मविश्वास और निरंतर विकास की एक महत्वपूर्ण यात्रा रहे हैं।

भारत सरकार के रेल मंत्रालय के अधीन एक प्रतिष्ठित नवरत्न सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम के रूप में आईआरएफसी भारतीय रेलवे के विकास और वित्तीय सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ऐसे संस्थान का हिस्सा बनना मेरे लिए गर्व और सम्मान का विषय रहा है। इन तीन वर्षों के दौरान मुझे न केवल प्रशासनिक एवं कार्यालयीन कार्यों को समझने का अवसर मिला, बल्कि संगठनात्मक मूल्यों, अनुशासन, टीमवर्क तथा सार्वजनिक सेवा की भावना को भी निकटता से अनुभव करने का अवसर प्राप्त हुआ।

प्रारंभिक चरण – सीखने और समझने का अवसर

आईआरएफसी में कार्यभार ग्रहण करने के प्रारंभिक दिनों में कार्यालय की कार्यप्रणाली, फाइल सिस्टम, प्रशासनिक प्रक्रियाएँ तथा विभिन्न विभागों के समन्वय को समझना एक नया अनुभव था। सरकारी एवं वित्तीय संस्थानों में कार्य करने की अपनी विशिष्ट प्रणाली होती है, जिसे समझने के लिए धैर्य, सजगता और निरंतर सीखने की आवश्यकता होती है।

वरिष्ठ अधिकारियों एवं सहकर्मियों के मार्गदर्शन में मुझे विभिन्न प्रशासनिक कार्यों, कार्यालय प्रबंधन, पत्राचार, नोटशीट तैयार करने, समन्वय कार्यों तथा नीति-संबंधी प्रक्रियाओं को समझने का अवसर मिला। इस दौरान मैंने यह अनुभव किया कि किसी भी संस्था की सफलता केवल नीतियों से नहीं, बल्कि कर्मचारियों की प्रतिबद्धता और सामूहिक प्रयासों से सुनिश्चित होती है।

जिम्मेदारियों के साथ बढ़ता आत्मविश्वास

समय के साथ मुझे विभिन्न महत्वपूर्ण कार्यों एवं जिम्मेदारियों का निर्वहन करने का अवसर मिला। कार्यालय प्रशासन, समन्वय, कर्मचारी हितों से जुड़े विषय, आधिकारिक पत्राचार तथा विभिन्न विभागों के साथ तालमेल स्थापित करने जैसे कार्यों ने मेरी कार्यक्षमता और आत्मविश्वास को और मजबूत किया।

आईआरएफसी में कार्य करते हुए मैंने यह सीखा कि प्रत्येक कार्य, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, संगठन के समग्र उद्देश्यों से जुड़ा होता है। समयबद्धता, सटीकता और जवाबदेही जैसे गुणों का महत्व यहां कार्य करते हुए और अधिक स्पष्ट हुआ।

इन वर्षों के दौरान कई ऐसे अवसर आए जब सीमित समय में महत्वपूर्ण कार्यों को पूरा करना चुनौतीपूर्ण था, लेकिन टीमवर्क और सकारात्मक कार्य वातावरण के कारण सभी कार्य सफलतापूर्वक संपन्न हुए। इससे मुझे कठिन परिस्थितियों में भी शांत रहकर कार्य करने और समाधान खोजने की क्षमता विकसित करने में सहायता मिली।

तकनीकी एवं व्यावसायिक विकास

आईआरएफसी लगातार आधुनिक कार्यप्रणाली एवं डिजिटल प्रक्रियाओं को अपनाने की दिशा में कार्य कर रहा है। ईआरपी, ई-ऑफिस, एचआरएमएस तथा डिजिटल फाइल प्रबंधन जैसी प्रणालियों के उपयोग ने कार्य

संस्कृति को अधिक पारदर्शी और प्रभावी बनाया है। इन प्रक्रियाओं के साथ कार्य करते हुए मुझे नई तकनीकों को सीखने और स्वयं को समय के अनुरूप विकसित करने का अवसर मिला।

इसके अतिरिक्त, विभिन्न कार्यालयीन प्रक्रियाओं, सरकारी दिशानिर्देशों तथा प्रशासनिक प्रबंधन से संबंधित अनुभवों ने मेरे व्यावसायिक ज्ञान को और अधिक समृद्ध किया।

सहयोगी कार्य संस्कृति का अनुभव

आईआरएफसी की सबसे बड़ी विशेषताओं में से एक इसकी सकारात्मक एवं सहयोगात्मक कार्य संस्कृति है। यहां वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा कर्मचारियों को मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन प्रदान किया जाता है, जिससे कार्य करने का उत्साह बना रहता है।

सहकर्मियों के साथ समन्वय, टीम भावना और पारस्परिक सहयोग ने कार्यालय के वातावरण को सदैव सकारात्मक बनाए रखा। यही कारण है कि कार्य का दबाव होने के बावजूद एक सीखने और आगे बढ़ने का माहौल बना रहता है।

इन तीन वर्षों में मैंने यह महसूस किया कि किसी भी संस्था की वास्तविक शक्ति उसके मानव संसाधन होते हैं। जब सभी कर्मचारी एक साझा उद्देश्य के साथ कार्य करते हैं, तब संगठन निरंतर प्रगति करता है।

उपलब्धियाँ और आत्मसंतोष

आईआरएफसी में कार्य करते हुए मुझे अनेक महत्वपूर्ण कार्यों में योगदान देने का अवसर प्राप्त हुआ, जो मेरे लिए गर्व का विषय है। विभिन्न प्रशासनिक कार्यों के सफल निष्पादन, समयबद्ध कार्यशैली और संगठनात्मक उद्देश्यों के प्रति प्रतिबद्धता ने मुझे व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक संतोष प्रदान किया।

इन तीन वर्षों में मैंने केवल कार्य अनुभव ही प्राप्त नहीं किया, बल्कि धैर्य, अनुशासन, जिम्मेदारी और सकारात्मक दृष्टिकोण जैसे महत्वपूर्ण जीवन मूल्यों को भी आत्मसात किया।

भविष्य के लिए संकल्प

आईआरएफसी में बिताए गए ये तीन वर्ष मेरे करियर की एक मजबूत नींव साबित हुए हैं। भविष्य में भी मैं अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन पूरी निष्ठा, ईमानदारी और समर्पण के साथ करते हुए संगठन की प्रगति में अपना योगदान देने के लिए प्रतिबद्ध हूं।

मैं आशा करता हूं कि आने वाले वर्षों में भी मुझे नए अनुभव प्राप्त होंगे और मैं अपने कार्यों के माध्यम से संस्था के उद्देश्यों को सफल बनाने में योगदान देता रहूंगा।

अंततः, आईआरएफसी के साथ यह तीन वर्षों का सफर मेरे लिए सीख, प्रेरणा और आत्मविकास की एक यादगार यात्रा रहा है, जिसे मैं सदैव गर्व के साथ याद रखूंगा।

रोहन श्रीवास्तव
सहायक (हिन्दी अनुवादक)

मेरा उत्तराखंड – मेरे बचपन की यादों का घर

उत्तर भारत में हिमालय की गोद में बसा "उत्तराखंड" भारत के सबसे सुंदर और पवित्र राज्यों में से एक है। अपनी अलौकिक सुंदरता, शांत वातावरण और पौराणिक धार्मिक स्थलों के कारण इसे "देवभूमि" कहा जाता है क्योंकि यहाँ हर जगह आस्था और प्रकृति का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। मंदिरों की घंटियों की आवाज़, नदियों की पवित्र धारा और लोगों की सादगी इस जगह को और भी खास बनाती है। यहाँ की संस्कृति, लोकगीत और लोगों का अपनापन दिल को छू जाता है। उत्तराखंड प्रशासनिक रूप से दो मुख्य मंडलों में बंटा हुआ है - गढ़वाल और कुमाऊँ। यहां के ऊचें बर्फीले पहाड़, घने जंगल और कल-कल बहती नदियां और हरी-भरी घाटियां हर किसी का मन मोह लेती है। भारत की सबसे पवित्र नदियां गंगा और यमुना इसी राज्य के क्रमश: गंगोत्री और यमुनोत्री ग्लेशियरों से निकलती है।

यहां सनातन धर्म के सबसे पवित्र चार धाम यथा बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री स्थित है। सिखों का सबसे पवित्र तीर्थ स्थल "हेमकुंड साहिब" भी इसी पावन धरती पर स्थित है। उत्तराखंड के पर्यटन स्थल मसूरी, नैनीताल, अलमोड़ा, रानीखेत, ऋषिकेश, जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क पर्यटकों के लिए एक स्वर्ग है। उत्तराखंड केवल बर्फ से ढके पहाड़ों या नदियों का राज्य नहीं है अपितु यह प्रकृति, संस्कृति और आध्यात्मिकता का अनूठा संगम है। जहां एक तरफ यहां की शांत वादियां मानसिक शांति देता है, वहीं दूसरी तरफ आधुनिक विकास की राह पर चलता यह राज्य देश के गौरव को बढ़ा रहा है।

उत्तराखंड आज देश के तेजी से विकसित होते हुए राज्यों में से एक है। शिक्षा के क्षेत्र में देहरादून को "स्कूलों की राजधानी" कहा जाता है। इसके अलावा उत्तराखंड देश का ऐसा पहला राज्य बन चुका है जिसने "समान नागरिक संहिता" को कानूनी रूप से लागू किया है। जो देश के इतिहास में एक बड़ा कदम है।

उत्तराखंड सिर्फ मेरा गृहनगर ही नहीं है, बल्कि मेरे बचपन की सबसे खूबसूरत यादों, सुकून और भावनाओं का घर है। यह वह जगह है जहाँ मैंने प्रकृति की असली सुंदरता को महसूस किया, पहाड़ों की ठंडी हवाओं में शांति पाई और अपने जीवन के सबसे प्यारे पल बिताए। यहाँ का हर पहाड़, हर रास्ता और हर सुबह मेरे दिल के बहुत करीब है।

मुझे आज भी अपने बचपन की वो सुबहें याद हैं, जब पहाड़ों के पीछे से निकलता सूरज पूरे आसमान को सुनहरे रंगों से भर देता था। घर के बाहर ठंडी हवाएँ चलती थीं, दूर-दूर तक फैली हरियाली आँखों को सुकून देती थी और पक्षियों की मधुर आवाज़ें दिन की सबसे खूबसूरत शुरुआत बन जाती थीं। बारिश के दिनों में मिट्टी की खुशबू और पहाड़ों पर छाए बादल किसी जादू से कम नहीं लगते थे।

बचपन में दोस्तों के साथ पहाड़ों के छोटे रास्तों पर घूमना, पेड़ों के बीच खेलना और बिना किसी चिंता के हँसना आज भी मेरी सबसे प्यारी यादों में शामिल है। उस समय जिंदगी बहुत सरल थी, लेकिन खुशियाँ सबसे ज्यादा थीं। शहरों की भीड़ और शोर में आज भी मुझे अपने पहाड़ों की वही शांति और अपनापन याद आता है।

मेरे लिए उत्तराखंड सिर्फ एक जगह नहीं, बल्कि एक एहसास है। यह मेरी पहचान है, मेरी यादें हैं और मेरे दिल का सबसे खूबसूरत हिस्सा है। मुझे गर्व है कि मैं इस देवभूमि से हूँ, क्योंकि यहाँ की खूबसूरती और बचपन की यादें हमेशा मेरे दिल में जीवित रहेंगी।

मुरारी लाल
सहायक (प्रशासन)

नारी शक्ति

बिजली चमकती है, तो आकाश बदल देती है।
आंधी उठती है, तो दिन-रात बदल देती है।
जब गरजती है नारी-शक्ति तो इतिहास बदल देती है।
नारी शक्ति को मेरा सलाम।
हर कदम पर मुझे दबाने का प्रयास किया जा रहा
फिर भी मुझे स्त्री होने पर गर्व है!
सुरक्षित महसूस नहीं करती हूँ मैं इस सभ्य समाज में
फिर भी मुझे स्त्री होने पर गर्व है!
मुझे इस पुरुष-प्रधान समाज में उपयोगी वस्तु समझा जा रहा है,
फिर भी मुझे स्त्री होने पर गर्व है!
असमानता बढ़ती जा रही है मेरे लिए
फिर भी मुझे स्त्री होने पर गर्व है!
पुरातन काल से भेदभाव की शिकार हूँ मैं
फिर भी मुझे स्त्री होने पर गर्व है!
हर एक गंदी नज़र से, हर कदम पर बचना पड़ता है मुझे
फिर भी मुझे स्त्री होने पर गर्व है!
ताने, घृणा, कुंठा सहकर मैं परेशान हूँ
फिर भी मुझे स्त्री होने पर गर्व है!
मुझे बेशक कोख में मार दिया जाता है
फिर भी मुझे स्त्री होने पर गर्व है!
आज चाहे जो भी हूँ मैं मुझे गर्व है अपने आप पर,
मुझे गर्व है एक माँ होने पर,
मुझे गर्व है मुझसे भेदभाव करने वाले इस समाज का निर्माण करने पर
मुझे गर्व है एक नारी होने पर
चाहे कुछ भी हो जाए ये गर्व बना रहेगा ऐसे ही
समाज चाहे जो भी समझे, जो भी सोचे
मेरा मान मेरी नज़रो से डिगेगा नहीं
मेरा मान कभी कम नहीं होगा
चाहे कुछ भी हो जाए,
फिर भे मुझे स्त्री होने पर गर्व है!
फिर भी मुझे स्त्री होने पर गर्व है!

संध्या वर्मा
पत्नी श्री अंशुल वर्मा
सहायक (वित्त)

इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉरपोरेशन
(रेल मंत्रालय का नवरत्न उपक्रम)
भविष्य पथ पर

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री मनोज कुमार दूबे की अध्यक्षता में सभी अधिकारियों की सहभागिता के साथ एक संवादात्मक सत्र की झलकियां (दिनांक: 13.11.2025)





हिन्दी कथा साहित्य का प्रकाशस्तंभ - कृष्णा सोबती



कृष्णा सोबती हिंदी साहित्य की एक अत्यंत प्रतिष्ठित, बेबाक और क्रांतिकारी लेखिका थीं। उन्हें हिंदी कथा साहित्य की "ग्रैंड डेम" माना जाता है जिन्होंने अपनी साहित्यिक रचनाओं और विशिष्ट भाषा शैली से अपनी रचनाओं में महिलाओं की पहचान, उनके अधिकारों, इच्छाओं और समाज में उनकी स्वतंत्र आवाज़ को प्रमुखता से उठाया।

उनका जन्म 18 फरवरी 1925 को गुजरात (विभाजन पूर्व पंजाब जो अब पाकिस्तान में है) में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा लाहौर, शिमला और दिल्ली में हुई। 1947 का देश विभाजन उनके लिए केवल एक राजनीतिक घटना नहीं अपितु ऐसी क्रांतिकारी विस्थापन की त्रासदी थी जिसने उनके भीतर के रचनाकार को जगाया। उनकी पहली कहानी "सिक्का बदल गया" में उन्होंने शाहनी के माध्यम से विस्थापन के उस दर्द, मानवीय क्रूरता और बेबसी को अत्यंत जीवंतता से शब्दों में पिरोया। वह आज भी विभाजन की सर्वश्रेष्ठ कहानियां में शामिल है।

उनकी भाषा सहज, जीवंत और पात्रों के अनुकूल होती थी। वह अपनी रचनाओं में हिंदी, पंजाबी, उर्दू और स्थानीय बोलियों के शब्दों का बहुत ही सुंदर मिश्रण करती थी। वह संख्यात्मक लेखन के बजाय गुणात्मक लेखन पर ध्यान देती थी। उनका मानना था कि कम लिखना ही विशिष्ट लिखना है। कृष्णा सोबती ने उपन्यास, लंबी कहानियां और संस्मरण जैसी विभिन्न विधाओं में कालजयी रचनाएं लिखी। हिंदी साहित्य में स्त्री के दमन और उसकी मुक्ति पर बहुत कुछ लिखा गया है, लेकिन कृष्णा सोबती जी ने "मित्रो मरजानी" उपन्यास में जो धमाका किया उसकी गूंज आज भी सुनाई देती है। उपन्यास की केंद्रीय पात्र "मित्रो" एक संयुक्त रूढ़िवादी परिवार की बहू है लेकिन वह अपनी शारीरिक और मानसिक इच्छाओं को लेकर पूरी तरह मुखर है। कृष्णा जी ने इसके माध्यम से पुरुष सत्तात्मक समाज के उस चरित्र को बेनकाब किया जो स्त्री को केवल भोग की वस्तु समझता है।

उनकी रचना "जिंदगीनामा" विभाजन-पूर्व पंजाब के शाहपुर के ग्रामीण और कृषक समाज का जीवित दस्तावेज है। इस उपन्यास में कोई एक नायक या नायिका नहीं है बल्कि पूरा लोक ही इसका नायक है। पंजाब के लोकगीत, त्यौहार, रीति रिवाज, खेती-बाड़ी की संस्कृति को कृष्णा जी ने बहुत सुंदर शब्दों में पिरोया। इसके लिए उन्हें 1980 का साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। कृष्णा सोबती जी ने हिंदी साहित्य में एक अनूठा प्रयोग किया। उन्होंने पुरुष उपनाम "हशमत" से अपने समकालीन लेखकों पर संस्मरण लिखे जो हिन्दी संस्मरण, साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं।

कृष्णा सोबती जी की सबसे बड़ी ताकत उनकी भाषा थी। उनकी भाषा कोई किताबी या तत्सम प्रधान हिंदी नहीं थी। उनकी भाषा में पंजाब की माटी की खुशबू, हिंदी, उर्दू, फारसी का लचीलापन और देशज शब्दों का एक ऐसा संजीव प्रयोग था जो सीधे पाठक के मर्म को छूता है। उनकी "ये लड़की" या "डार से बिछुड़ी" जैसी लंबी कहानियां को पढ़ते हुए ऐसे लगता है जैसे कोई कविता गद्य के रूप में बह रही हो।

उनकी प्रमुख रचनाओं में "मित्रो मरजानी", "जिंदगीनामा", "सूरजमुखी अंधेरे के", "डार से बिछुड़ी" उपन्यास है और "सिक्का बदल गया है", "बादलों के घेरे" कहानी संग्रह है और "हम हशमत" (भाग-I, II, III) संस्मरण हैं।

उन्हें वर्ष 1980 में साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1996 में साहित्य अकादमी फेलोशिप और 2017 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

25 जनवरी 2019 को अपनी लंबी और सार्थक जीवन यात्रा पूरी करके वह पंचतत्व में विलीन हो गई। कृष्णा सोबती जी का जाना हिंदी साहित्य के एक युग का अवसान था। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से आने वाली पीढियों को यह सिखाया कि विपरीत परिस्थितियों में भी अपनी अस्मिता और स्वाभिमान को कैसे बचाए रखा जाता है। कृष्णा सोबती जी न केवल एक लेखिका थी बल्कि हिंदी साहित्य की एक संस्था थी। उन्होंने कभी भी अपने लेखन या विचारों में रूढ़ियों से समझौता नहीं किया। वे आज भी अपने शब्दों, पात्रों और अपनी अद्वितीय भाषा शैली के माध्यम से हमारे बीच सदैव जीवित हैं और हमेशा रहेंगी।

हिन्दी साहित्य की महान विभूति को शत-शत प्रणाम।

पुष्पिन्दर कौर
हिन्दी सलाहकार

- राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है। - महात्मा गांधी
- राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है। - बालकृष्ण शर्मा नवीन
- हिंदी जैसी सरल भाषा दूसरी नहीं है। - मदन मोहन मालवीय
- हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है और यह हमारी चेतना का प्राण है। - सुमित्रानंदन पंत

सिक्का बदल गया - कृष्णा सोबती

खद्दर की चादर ओढ़े, हाथ में माला लिए शाहनी जब दरिया के किनारे पहुंची तो पौ फट रही थी। दूर-दूर आसमान के परदे पर लालिमा फैलती जा रही थी। शाहनी ने कपड़े उतारकर एक ओर रक्खे और "श्रीराम, श्रीराम" करती पानी में हो ली। अंजलि भरकर सूर्य देवता को नमस्कार किया, अपनी उनीदी आंखों पर छींटे दिये और पानी से लिपट गयी!

चनाब का पानी आज भी पहले सा ही सर्द था। लहरें लहरों को चूम रही थीं। वह दूर सामने काश्मीर की पहाड़ियों से बर्फ पिघल रही थी। उछल-उछल आते पानी के भवरों से टकराकर कगारे गिर रहे थे लेकिन दूर-दूर तक बिछी रेत आज न जाने क्यों खामोश लगती थी। शाहनी ने कपड़े पहने, इधर-उधर देखा, कहीं किसी की परछाई तक न थी। पर नीचे रेत में अगणित पांवों के निशान थे। वह कुछ सहम सी उठी।

आज इस प्रभात की मीठी नीरवता में न जाने क्यों कुछ भयावना-सा लग रहा है। वह पिछले पचास वर्षों से यहां नहाती आ रही है। कितना लम्बा अरसा है। शाहनी सोचती है, एक दिन इसी दुनिया के किनारे वह दुलहिन बनकर उतरी थी। और आज आज शाहजी नहीं, उसका वह पढ़ा-लिखा लड़का नहीं, आज वह अकेली है. शाहजी की लम्बी-चौड़ी हवेली में अकेली है। पर नहींयह क्या सोच रही है वह सवेरे सवेरे। अभी भी दुनियादारी से मन नहीं फिरा उसका। शाहनी ने लम्बी सास ली और "श्री राम, श्री राम", करती बाजरे के खेतों से होती घर की राह ली। कहीं-कहीं लिपे-पुते आंगनों पर से धुआं उठ रहा था। टनटनबैलों, की घंटियां बज उठती हैं। फिर भी फिर भी कुछ बंधा-बंधा-सा लग रहा है। "जम्मीवाला" कुआं भी आज नहीं चल रहा। ये शाहजी की ही असामियां हैं। शाहनी ने नंजर उठायी। यह मीलों फैले खेत अपने ही हैं। भरी-भरायी नई फसल को देखकर शाहनी किसी अपनत्व के मोह में भीग गयी। यह सब शाहजी की बरकते हैं। दूर-दूर गांवों तक फैली हुई जमीनें, जमीनों में कुएं सब अपने हैं। साल में तीन फसल, जमीन तो सोना उगलती है। शाहनी कुएं की ओर बढ़ी, आवांज दी, "शेरे, शेरे, हसैना हसैना...।"

शेरा शाहनी का स्वर पहचानता है। वह न पहचानेगा। अपनी मां जैना के मरने के बाद वह शाहनी के पास ही पलकर बड़ा हुआ। उसने पास पड़ा गंडासा "शटाले" के ढेर के नीचे सरका दिया। हाथ में हक्का पकड़कर बोला "पे हैसैना-सैना..।" शाहनी की आवांज उसे कैसे हिला गयी है। अभी तो वह सोच रहा था कि उस शाहनी की ऊंची हवेली की अंधेरी कोठरी में पड़ी सोने-चांदी की सन्दूकचियां उठाकर...कि तभी शेरे शेरे...। शेरा गुस्से से भर गया। किस पर निकाले अपना क्रोध? शाहनी पर चीखकर बोला ऐ मर गयीं एं एब्ब तैनू मौत दे।

हसैना आटेवाली कनाली एक ओर रख, जल्दी-जल्दी बाहिर निकल आयी। "ऐ आयीं आं क्यों अवेले (सुबह-सुबह) तड़पना एं?"

अब तक शाहनी नजदीक पहुंच चुकी थी। शेरे की तेजी सुन चुकी थी। प्यार से बोली, "हसैना" यह वक्त लड़ने का है? वह पागल है तो तू ही जिगरा कर लिया कर।"

जिगरा। हसैना ने मान भरे स्वर में कहा शाहनी, लड़का आखिर लड़का ही है। कभी शेरे से भी पूछा है कि मुंह अंधेरे ही क्यों गालियां बरसाई हैं इसने? शाहनी ने लाह से हसैना की पीठ पर हाथ फेरा, हंसकर बोली पगली मुझे तो लड़के से बहू प्यारी है। शेरे हां शाहनी।

मालूम होता है। रात को कुल्लूवाल के लोग आये हैं यहां? शाहनी ने गम्भीर स्वर में कहा।

शेरे ने जरा रुककर, घबराकर कहा, "नहीं शाहनी शेरे के उत्तर की अनसुनी कर शाहनी जरा चिन्तित स्वर से बोली, "जो कुछ भी हो सा है, अच्छा नहीं। सेरे, आज शाहजी होते तो शायद कुछ बीच-बचाव करते। पर शाहनी कहते-कहते रुक गयी। आज क्या हो रहा है। साहनी को लगा जैसे जी भर-भर आ रहा है। शाहजी को वितुडे कई साल बीत गये, परपर आज कुछ पिचल रहा है शायद पिछली स्मृतियां आसुओं को रोकने के प्रयत्न में उसने हसैना की और देखा और हल्के से हंस पड़ी। और शेरा सोच ही रहा है, क्या कह रही है शाहनी आजा आज शाहनी क्या, कोई भी कुछ नहीं कर सकता। यह होके रहेगा क्यों न हो? हमारे ही भाई-बन्दों से सूद ने-सेक्य शाहजी सोने की बोरिया तोला करते थे। प्रतिहिंसा की आम शेरे की आंखों में उतर आयी। गंडासे की याद हो आयी। शाहनी की ओर देखानहीं नहीं, शेरा इन पिछले दिनों में तीस-चालीस कलन कर चुका है परपर वह ऐसा नीच नहीं...सामने बैठी शाहनी नहीं, शाहनी के हाथ उसकी आंखों में तैर गये। वह सदियों की राते कभी-कभी शाहजी की हाट साके वह हवेली में पड़ा रहता था। और फिर लालटेन की रोशनी में वह देखता है। शाहनी के ममता भरे हाथ दूध का कटोरा गामे हुए मेरे-सेरे, उठ, पी ले। शेरे ने शाहनी के झुर्रियां पड़े मुंह की ओर देखा तो शाहनी धीरे से मुस्करा रही थी। शेरा विचलित हो गया। आखिर शाहनी ने क्या बिगाड़ा है हमारा? शाहजी की बात शाहजी के साथ गयी, वह शाहनी को जरूर बचाएगा। लेकिन कल रात वाला नहवसा वह कैसे मान गया था फौज की बाता सब कुछ ठीक हो जाएगा सामान बांट लिया जाएगा।

शाहनी चलो तुम्हें घर तक छोड़ आउं।

साहनी उठ खड़ी हुई। किसी गहरी सोच में चलती हुई शाहनी के पीछे-पीछे मंजबूत कदम उठाता शेरा चल रहा है। शंकित-सा-इधर उधर देखाता जा रहा है। अपने साथियों की बातें उसके कानों में गूंज रही है। पर क्या होगा शाहनी को मारकर? शाहनी!

हां शेरे। शेरा चाहता है कि सिर पर आने वाले खतरे की बात कुछ ती शाहनी को बता दे, मगर यह कैसे कहें?

शाहनी ने सिर ऊंचा किया। आसमान धुएं से भर गया था। "शेरे"

शेरा जानता है यह आग है। जबलपुर में आज आग लगनी थी लग गयी। शाहनी कुछ न कह सकी। उसके नाते रिश्ते सब वहीं हैं। हवेली आ गयी। शाहनी ने शून्य मन से दयोढ़ी में कदम रक्खा। मेरा कब लौट गया उसे कुछ पता नहीं। दुर्बन सी देह और अकेली, बिना किसी सहारे का न जाने कब तक वहीं पड़ी रही शाहनी। दुपहर आयी और चाली गयी। हवेली खुनी पड़ी है। आज शाहनी नहीं उठ उसका अधिकार आज स्वयं ही उससे छूट रहा है। शाहजी के घर की मालकिन लेकिन नहीं, आज मोह नहीं हट रहा। मानो पत्थर हो गयी हो। पड़े पडे सांझ हो गयी, पर उठने की बात फिर भी नहीं सोच पा रही। अचानक रसूली की आवाज सुनकर चौंक उठी। साहनी शाहनी, सूनो टूके आती हैं जेने?

ट्रके? शाहनी इसके सिवाय और कुछ न कह सकी। हाथी ने एक-दूसरे को थाम लिया। बात की बात में सबर गांव भर में फैर गयी। बीबी ने अपने विकृत कण्ठ से कहा शाहनी, आज तक कभी ऐसा न हुआ, न कभी सुना। गजब हो गया, अधेर पड़ गया। शाहनी मूर्तिवत् वहीं खड़ी रही। नवाब बीबी ने स्नेह सनी उदासी से कहा शाहनी, इमने तो कभी न सोचा था। शाइनी क्या करे कि उसीने ऐसा सोचा था। नीचे से पटवारी बेगू और जैसदार की बातचीत सुनाई दी। शाहनी समझी कि वक्त आन पहुंचा। मशीन की तरह नीचे आरी, पर इगोडी न लांघ सर्वचे। किसी गहरी, बहुत गहरी आगंज से पूज कौन? कौन हैं वहां? कौन नहीं है। आज यहां? सारा गाव है, जो उसके इशारे पर नाचता था कभी। उसकी असामियां हैं जिन्हें आने अपने नाते-रिश्तों से की कम नहीं समझा। लेकिन नहीं, आज उसका कोई नहीं, आज वह अकेली है। यह भीड़ की भीड़, उनमें कुल्लूवाल के जाट। वह क्या सुबह ही न समझ गयी थी?

बेगू पटवारी और मसीत के मुल्ला इस्माइल ने जाने क्या सोचा। शाहनी के निकट आ खड़े हुए। बेगू आज शाहनी की ओर देख नहीं पा रहा। धीरे से जरा गला साफ करते हुए कहा शाहनी, रब्ब नू एही मंजूर सी।

शाहनी के कदम डोल गये। चक्कर आया और दीवार के साथ लग गयी। इसी दिन के लिए छोड़ गये थे शाहजी उसे? बेजान-सी साहनी की ओर देखकर बेगू सोच रहा है क्या गुजर रही है गहनी परा मगर क्या हो सकता है। सिक्का बदल गया है।

शाहनी का घर से निकलना छोटी-सी बात नहीं। गांव का गांव खड़ा है हवेली के दरवाजे से लेकर उस दारे तक जिसे शाहजी ने अपने पुत्र की शादी में बनवा दिया था। तब से लेकर आज तक सब फैसले, सब मशविरे यहीं होते रहे हैं। इस बड़ी हवेली को जूट लेने की बात भी यही सोची गयी थी। यह नहीं कि शाहनी कुछ न जानती हो। वह जानकर भी अनजान बनी रही। उसने कभी खैर नहीं जाना। किसी का बुरा नहीं किया। लेकिन बूढ़ी शाहनी यह नहीं जानती कि सिक्का बदल गया है...

देर हो रही थी। थानेदार दाऊद खां जरा अकड़कर आगे आया और ड्योढ़ी पर खड़ी जड़ निर्जीव छाया को देखकर ठिठक गया। वही शाहनी है जिसके शाहजी उसके लिए दरिया के किनारे खेमे लगवा दिया करते थे। यह तो वही शाहनी है जिसने उसकी मंगेतर को सोने के कनफूल दिये थे मुंह दिखाई में। अभी उसी दिन जब वह लीग के सिलसिले में आया था तो उसने उद्दंडता से कहा था शाहनी, भागोवाल मसीत बनेगी, तीन सौ रुपया देना पड़ेगा। शाहनी ने अपने उसी सरल स्वभाव से तीन सौ रुपये दिये थे। और आज...?

चांदी

शाहनी। इयोदी के निकट जाकर बोला देर हो रही है शाहनी। (धीरे से) कुछ साथ रखना हो तो रख लो। कुछ साथ बांध लिया है? सोना-

शाइनी अस्फुट स्वर से बोली सोना-चांदी। जरा ठहरकर सादगी से कहा सोना-चांदी। बच्चा वह सब तुम लोगों के लिए है। मेरा सोना तो एक एक जमीन में बिछा है।

दाऊद खां लज्जित-सा हो गया। "शाहनी तुम अकेली हो, अपने पास कुछ होना जरूनी है। कुछ नकदी ही रख लो। वक्त का कुछ पता नहीं।

वक्त? शाहनी अपनी गीली आंखों से हंस पड़ी। "दाऊद खा, इससे अच्छा वक्त देखने के लिए क्या मैं जिन्दा रहूंगी। किसी गहरी वेदना और तिरस्कार से कह दिया शाहनी ने।

दाऊद खां निस्तर है। साहस कर बोला साहनी कुछ नकदी जरूरी है।

नहीं बच्चा मुझे इस घर से शाहनी का गला रुथ गया नकदी प्यारी नहीं। यहां की नकदी यहीं रहेगी।

शेरा आन खड़ा गुजरा कि हो ना हो कुछ मार रहा है शाहनी से। "खा साहिब देर हो रही है"

शाहनी चौंक पड़ी। देरमेरे घर में मुझे देर आंसुओं की भंवर में न जाने कहाँ से विद्रोह उमड़ पड़ा। मैं पुरखों के इस बड़े घर की रानी और यह मेरे ही अन्न पर पले हुए नहीं। यह सब कुछ नहीं। ठीक हैदेर हो रही हैपर नहीं, शाहनी रो-रोकर नहीं, शान से निकलेगी इस पुरतों के घर से, मान से लॉघेगी यह देहरी, जिस पर एक दिन वह रानी बनकर आ खड़ी हुई थी। अपने लड़खड़ाते कदमों को संभालकर शाहनी ने दुपट्टे से आंखें पोरीं और ड्योढ़ी से बाहर हो गयी। बड़ी-बूढ़ियाँ रो पड़ीं। किसकी तुलना हो सकती थी इसके साथा खुदा ने सब कुछ दिया था, मगरमगर दिन बदले, वक्त बदले...

शाहनी ने दुपट्टे से सिर दॉपकर अपनी धुंधली आंखों में से हवेली को अन्तिम बार देखा। शाहजी के मरने के बाद भी जिस फूल की अमानत को उसने सहेजकर रखा आज वह उसे धोखा दे गयी। शाहनी ने दोनों हाथ जोड़ लिए यही अन्तिम दर्शन था, यही अन्तिम प्रणाम था। शाहनी की आंखें फिर कभी इस ऊंची हवेली को न देखी पाएंगी। प्यार ने ओर मारासौचा, एक बार घूम-फिर कर पूरा घर क्यों न देख आयी मैं? जी छोटा हो रहा है, पर जिनके सामने हमेशा बड़ी बनी रही है उनके सामने वह ओटी न होगी। इतना ही ठीक है। बस हो चुका। सिर झुकाया। ड्योढ़ी

के आगे कुलवधू की आंखों से निकलकर कुछ बन्दै चू पड़ीं। शाहनी चल दीऊचा-सा भवन पीछे खड़ा रह गया। दाऊद खां, शेरा, पटवारी, जैलदार और छोटे-बड़े, बच्चे, बूढ़े-मर्द औरतें सब पीछे-पीछे।

टुके अब तक भर चुकी थी। शाहनी अपने को खींच रही थी। गांववालों के गलों में जैसे धुंआ उठ रहा है। शेरे, खूनी शेरे का दिल टूट रहा है। दाऊद खां ने आगे बढ़कर ट्रक का दरवाजा खोला। शाहनी बढी इस्माइल ने आगे बढ़कर भारी आवांज से कहा शाहनी, कल कह जाओ। तुम्हारे मुंह से निकली असीस झूठ नहीं हो सकती। और अपने साफे से आंखों का पानी पोछ लिया। शाहनी ने उठती हुई हिचकी को रोककर संथे संधे से कहा, रब्ब तुहानू सलामत रक्खे बच्चा, खुशियां बक्शे....।

वह छोटा-सा जनसमूह रो दिया। जरा भी दिल में मैल नहीं शाहनी के। और हमहम शाहनी को नहीं रख सके। शेरे ने बढ़कर शाहनी के पांत हुए, शाहनी कोई कुछ कर नहीं सका। राज भी पलट गया, शाहनी ने कांपता हुआ हाथ शेरे के सिर पर रक्खा और रुक-रुककर कहा तैनू भाग जगण चन्ना।, (ओ चाँद तेरे भाग्य जागें। दाऊद खां ने हाथ का संकेत किया। कुछ बड़ी-बूटियां शाहनी के गले लगी और ट्रक चल पड़ी।)

अन्न-जन उठ गया। वह हवेली, नई बैठक, ऊंचा चौबारा, बडा पसार एक एक करके घूम रहे हैं शाहनी की आंखों में। कुछ पता नहींट्रक चल दिया है या वह स्वय चल रही है। आखें बरस रही हैं। दाऊद खां विचलित होकर देख रहा है इस बूढ़ी शाहनी को। कहां जाएगी अब वह?

शाहनी मन में मैन न लाना। कुछ कर सकते तो उठा न रखती वक्त ही ऐसा है। राज पलट गया है। सिक्का बदल गया है।

रात को शाहनी जब कैंप में पहुंचकर जमीन पर पड़ी तो लेटे-लेटे आहत मन से सोचा राज पलट गया है...सिक्का क्या बदलेगा? वह तो मैं वहीं छोड़ आयी।...

और शाहजी की शाहनी की आंखें और भी गीली हो गयीं।

आसपास के हरे-हरे खेतों से घिरे गांवों में रात खून बरसा रही थी।

शायद राज पलटा भी खा रहा था और सिक्का बदल रहा था।

हिंदी भारत की सामासिक संस्कृति की अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम है। - बाल गंगाधर तिलक

योग और ध्यान का महत्व

आज के आधुनिक और व्यस्त जीवन में मनुष्य अनेक प्रकार की शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक समस्याओं का सामना कर रहा है। तनाव, चिंता और विभिन्न रोगों ने लोगों के जीवन को प्रभावित किया है। ऐसे समय में योग और ध्यान स्वस्थ एवं संतुलित जीवन जीने का एक प्रभावी माध्यम बनकर उभरे हैं। भारत की प्राचीन संस्कृति की यह अमूल्य धरोहर आज पूरे विश्व में लोकप्रिय हो चुकी है।

योग का महत्व

योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं है, बल्कि यह शरीर, मन और आत्मा के बीच संतुलन स्थापित करने की एक कला है। नियमित योगाभ्यास से शरीर मजबूत बनता है। विश्वभर में लोग इनकी उपयोगिता को समझ रहे हैं और अपने दैनिक जीवन में इन्हें अपना रहे हैं। प्रत्येक वर्ष 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है, जो योग के वैश्विक महत्व को दर्शाता है। योग शरीर की ऊर्जा (प्राणशक्ति) को संतुलित करता है। जब शरीर की ऊर्जा प्रवाह में बाधा नहीं होती, तब व्यक्ति अधिक सक्रिय, शांत और केंद्रित रहता है।

ध्यान का महत्व

ध्यान एक मानसिक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने मन को किसी एक बिंदु, विचार या श्वास पर केंद्रित करता है। यह मन की चंचलता को कम करता है और गहरी आंतरिक शांति प्रदान करता है। ध्यान के अभ्यास में व्यक्ति धीरे-धीरे अपने विचारों को नियंत्रित करना सीखता है और वर्तमान क्षण में जीना शुरू करता है। ध्यान मन को एकाग्र और शांत करने की प्रक्रिया है। यह व्यक्ति को अपने विचारों और भावनाओं पर नियंत्रण रखना सिखाता है। नियमित ध्यान करने से मानसिक तनाव कम होता है और मन में सकारात्मकता का विकास होता है। ध्यान से एकाग्रता, स्मरण शक्ति और निर्णय लेने की क्षमता में वृद्धि होती है। विद्यार्थियों, कर्मचारियों और व्यवसायियों के लिए ध्यान विशेष रूप से लाभकारी है क्योंकि यह कार्यक्षमता और उत्पादकता को बढ़ाने में मदद करता है।

योग और ध्यान का संयुक्त प्रभाव

जब योग और ध्यान को एक साथ अपनाया जाता है, तो इनके लाभ और अधिक बढ़ जाते हैं। योग शरीर को स्वस्थ और ऊर्जावान बनाता है, जबकि ध्यान मन को शांत और स्थिर करता है। दोनों मिलकर व्यक्ति के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। योग और ध्यान के नियमित अभ्यास से व्यक्ति आत्मविश्वासी, अनुशासित और सकारात्मक बनता है। इससे जीवन में संतुलन, शांति और आनंद की अनुभूति होती है।

योग और ध्यान स्वस्थ जीवन की कुंजी हैं। ये न केवल शारीरिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाते हैं, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक विकास में भी सहायक होते हैं। वर्तमान समय में प्रत्येक व्यक्ति को अपने दैनिक जीवन में योग और ध्यान को शामिल करना चाहिए ताकि वह स्वस्थ, सुखी और सफल जीवन जी सके। वास्तव में, योग और ध्यान मानव जीवन को बेहतर बनाने का एक सरल और प्रभावी मार्ग हैं।

सुमित कुमार
ऑफिस असिस्टेंट

महिला सशक्तिकरण – एक सशक्त और विकसित समाज की आधारशिला

महिला सशक्तिकरण आज के समय की सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक आवश्यकताओं में से एक है। किसी भी देश की प्रगति इस बात पर निर्भर करती है कि वहां की महिलाएं कितनी सुरक्षित, शिक्षित और आत्मनिर्भर हैं। महिला सशक्तिकरण का अर्थ है महिलाओं को ऐसे अधिकार, अवसर और स्वतंत्रता प्रदान करना, जिससे वे अपने जीवन से जुड़े निर्णय स्वयं ले सकें और समाज में समान रूप से भाग ले सकें।

महिला सशक्तिकरण का अर्थ और महत्व

महिला सशक्तिकरण का मतलब केवल महिलाओं को अधिकार देना नहीं है, बल्कि उन्हें मानसिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से मजबूत बनाना है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें महिलाएं अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होती हैं और किसी भी प्रकार के भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाने में सक्षम होती हैं।

महिला सशक्तिकरण का महत्व कई स्तरों पर देखा जा सकता है। सबसे पहले, यह सामाजिक समानता को बढ़ावा देता है। जब महिलाएं और पुरुष समान रूप से अवसर प्राप्त करते हैं, तो समाज अधिक संतुलित और न्यायपूर्ण बनता है। दूसरे, यह आर्थिक विकास में योगदान देता है। यदि महिलाएं कार्यबल में भाग लेती हैं, तो देश की आर्थिक स्थिति मजबूत होती है। तीसरे, यह परिवार और आने वाली पीढ़ियों के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि एक शिक्षित और सशक्त महिला अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा और संस्कार देती है।

महिलाओं की वर्तमान स्थिति

भारत में महिलाओं की स्थिति समय के साथ काफी बदली है। आज महिलाएं शिक्षा, चिकित्सा, विज्ञान, खेल, राजनीति, प्रशासन और रक्षा जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। कल्पना चावला और सुनीता विलियम्स जैसी महिलाएं इस बात का उदाहरण हैं कि यदि अवसर मिले तो महिलाएं किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकती हैं।

हालांकि, आज भी समाज के कुछ हिस्सों में महिलाओं को भेदभाव, असमान वेतन, घरेलू हिंसा और सामाजिक बंधनों का सामना करना पड़ता है। ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी कई लड़कियों को शिक्षा से वंचित रखा जाता है। यह स्थिति महिला सशक्तिकरण की राह में बड़ी बाधा है।

महिला सशक्तिकरण की चुनौतियाँ

महिला सशक्तिकरण के मार्ग में कई चुनौतियाँ हैं। सबसे बड़ी चुनौती मानसिकता की है, जहां महिलाओं को पुरुषों से कम समझा जाता है। इसके अलावा अशिक्षा, गरीबी, बाल विवाह, दहेज प्रथा और कार्यस्थल पर असुरक्षा जैसी समस्याएं भी महिलाओं की प्रगति में बाधा डालती हैं। कई बार महिलाएं अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं होतीं, जिसके कारण वे अन्याय सहने को मजबूर हो जाती हैं।

सरकारी प्रयास और योजनाएँ

भारत सरकार ने महिला सशक्तिकरण के लिए कई योजनाएं और कानून लागू किए हैं जैसे-:

क. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना
ख. उज्ज्वला योजना
ग. महिला हेल्पलाइन और सुरक्षा कानून
घ. स्वयं सहायता समूह को बढ़ावा

इन योजनाओं का उद्देश्य महिलाओं को शिक्षा, सुरक्षा और रोजगार के अवसर प्रदान करना है।

समाधान और उपाय

महिला सशक्तिकरण को सफल बनाने के लिए समाज के हर वर्ग को मिलकर काम करना होगा। सबसे पहले लड़कियों की शिक्षा को प्राथमिकता देनी चाहिए। इसके साथ ही महिलाओं को रोजगार और कौशल प्रशिक्षण के अवसर मिलने चाहिए।

परिवार स्तर पर भी बेटियों को बेटों के समान अवसर और सम्मान देना जरूरी है। जब परिवार में समानता की भावना विकसित होगी, तभी समाज में वास्तविक परिवर्तन आएगा।

महिला सशक्तिकरण केवल एक सामाजिक मुद्दा नहीं, बल्कि राष्ट्र के विकास की आधारशिला है। एक सशक्त महिला न केवल अपने परिवार को मजबूत बनाती है, बल्कि पूरे समाज को आगे बढ़ाने में मदद करती है। इसलिए आवश्यक है कि हम सभी मिलकर महिलाओं को समान अधिकार, शिक्षा और स्वतंत्रता प्रदान करें। जब महिलाएं सशक्त होंगी, तभी एक विकसित, समृद्ध और समानता आधारित समाज का निर्माण संभव होगा।

उमेश चंद्र
कार्यालय सहायक

चाय पर चर्चा

हमारे यहाँ सुबह की पहली धूप खिड़की से बाद में आती है, रसोई से चाय की खुशबू पहले आती है। सच कहूँ तो, भारत में चाय के बिना सुबह की शुरुआत की कल्पना करना भी मुश्किल है। घर पर कोई मेहमान अचानक आ जाए, दफ़्तर में काम करते-करते सिर भारी होने लगे, या शाम को दोस्तों के साथ गपशप का मूड हो - हर माहौल को जो जमा दे, वही है अपनी चाय। अदरक, इलायची और तुलसी के पत्तों वाली वो कड़क गर्मागर्म चाय, जिसका एक घूंट लेते ही अंदर तक सुकून मिल जाता है।

हमारे देश में चाय सिर्फ एक ड्रिंक नहीं है, यह एक इमोशन है। सुबह आँख खुलने से लेकर ऑफिस की थकान मिटाने तक, हमें हर बात के लिए चाय चाहिए होती है। और जहाँ दो लोग चाय के कुल्हड़ हाथ में लेकर खड़े हो गए, समझो वहाँ "चाय पर चर्चा" शुरू हो गई।

चाय की एक चुस्की के साथ शुरू होने वाली बातचीत में देश की राजनीति, क्रिकेट का स्कोर, मौसम का हाल, बॉलीवुड की गॉसिप से लेकर जिंदगी के गहरे दर्शन तक सब कुछ शामिल हो जाता है। दफ्तर के काम के बीच या पढ़ाई के दबाव के दौरान, दोस्तों के साथ 10 मिनट की "चाय पर चर्चा" मानसिक थकान को दूर कर स्फूर्ति भर देती है।

चाय हमारे लिए सिर्फ एक प्याली में भरा हुआ लिक्विड नहीं है; यह एक बहाना है अपनों के साथ बैठने का, दिल की बातें साझा करने का। सड़कों के नुक्कड़ पर बनी वो छोटी सी टपरी, जहाँ सवेरे-सवेरे कड़ाही में चाय खौल रही होती है, से लेकर बड़े-बड़े आलीशान कैफ़े तक - चाय ने हर जगह अपनी एक अलग ही सल्तनत खड़ी कर रखी है। हाँ, स्वाद और दीवानगी अपनी जगह है, लेकिन सेहत का ख्याल रखते हुए इसे लिमिट में ही पीना समझदारी है।

भारत में चाय सिर्फ एक पेय पदार्थ नहीं है, बल्कि यह एक भावना है। सुबह की शुरुआत से लेकर रात की थकान मिटाने तक, चाय हमारे जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा बन चुकी है।

दिलचस्प बात यह है कि हमारे देश के हर शहर का चाय से एक अलग ही रिश्ता है। मुंबई की रफ़्तार में जहाँ "कटिंग चाय" लोगों को तुरंत एनर्जी देती है, वहीं बनारस के घाटों पर या कोलकाता की गलियों में मिट्टी के कुल्हड़ में मिलने वाली सोंधी चाय का स्वाद सीधे आत्मा को छू जाता है। यह सिर्फ एक पेय नहीं बल्कि भारत की धड़कन है।

भारत दुनिया में चाय का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है, लेकिन हम जितनी चाय उगाते हैं, उसका लगभग 70 से 80 प्रतिशत हिस्सा हम खुद ही पी जाते हैं!

संक्षेप में कहें तो, चाय भारतीय संस्कृति का एक ऐसा अटूट हिस्सा बन चुकी है जिसके बिना हमारे जीवन की रफ़्तार अधूरी लगती है। यह रोज़मर्रा की भागदौड़ में चंद मिनटों का वो सुकून है, जो हर किसी को तरोताज़ा कर देता है।

विधि गर्ग
पीएम इंटर्न

आईटी विभाग की रोज़मर्रा की दिनचर्या

सुबह 09:30 बजे लॉगिन किया,
सिस्टम ने बोला "अपडेट लिया?"
मेल खोला तो शॉक लगा,
"तत्काल" लिख के 5 टिकट पढ़ा।
मैनेजर बोला – "बस छोटा सा काम,"
डेवलपर बोला – "सर्वर है शांत।"
उपयोगकर्ताओं ने कॉल पे चिल्लाया ज़ोर,
"ई-ऑफिस वेबसाइट और डीएससी पहले से ही डाउन है!"
वाई-फाई और इंटरनेट गया तो सब घबराये,
जैसे बिना चाय के दिन ना जाए।
एचआर बोला - "कृपया प्रोजेक्टर ठीक करें,"
आईटी वाला बन गया इलेक्ट्रीशियन-डॉक्टर।
लंच का टाइम कब हो गया,
पुरा प्रोडक्शन इसे खारिज कर रहा है।
रात के 11 बजे पिंग आया-
"भाई, एक मुद्दा और समझा?"
"बस 2 मिनट का काम है भाई,"
सुनके आईटी वाले की रूह हिल जाए।
कभी पासवर्ड रीसेट करो,
कभी प्रिंटर को प्यार से मनाओ।
कभी माउस का बैटरी ड्रामा,
कभी टीम्स मीटिंग का हंगामा।
शुक्रवार को सब पार्टी मांगे,
आईटी वाले पैच अपडेट तांगे।
सब बोलते – "तुम तो बस कंप्यूटर चलाते हो,"
अंदर से वो आंसू छुपाते हैं।
फिर भी हर ऑफिस की जान वही,
सर्वर रूम का महान वही।
अगर आईटी वाला निकल जाए,
पुरा कंपनी "रीस्टार्ट" हो जाये!

सौरभ
इंजीनियर आईटी

चाँद से आगे का आसमान

दौड़ती-भागती हुई स्त्री,
हँसती ज़ोर से खिलखिलाती हुई स्त्री।

परंपराओं के ढोंग को चुनौती देती हुई स्त्री,
मुझे बहुत अच्छी लगती है अपनी ही सुनने वाली स्त्री।

अपने विचारों से रास्ता चुनने वाली स्त्री,
बड़ी सड़कों पर गाड़ी दौड़ाती हुई स्त्री,
मेरे मन को बहुत भाती है अल्हड़, बेबाक और बगावती-सी स्त्री।

खुश हो जाती हूँ देखकर कि कितना कुछ संभालती है स्त्री।
घर संभालकर दफ़्तर को जाती हुई स्त्री,
आराम की भागीदार वो भी है, जैसे तुम हो,
फिर भी अब तक कईयों को पूरी तरह समझ ना आई हुई स्त्री।

आसमान है तुम्हारा, तुम्हारी ही रचना है ये दुनिया,
मुझे बहुत अच्छी लगती है ये समझती हुई स्त्री।
एक स्त्री को चाँद-सा कहकर उसे सीमित रखने वाली ये दुनिया,

तुम ही पृथ्वी हो, तुम ही सूरज भी, तुम ही गंगा और समंदर भी तुम।
मुझे बहुत अच्छी लगती है अपनी हिम्मत को पहचानती हुई स्त्री,
जो जानती है — वो सिर्फ चाँद नहीं, पूरा आसमान है।

सिमरन धीर
वरिष्ठ सचिवीय सहायक

घर से काम - शयनकक्ष या दफ़्तर

मेज़ पर लैपटॉप खुला है,
खिड़की पर धूप बिखरी है...
दोनों पुकारते हैं, मैं किसे सुनूँ?

कुर्सी दफ़्तर वाली नहीं,
बस बिस्तर का कोना है -
जहाँ सपने लॉग-इन करते हैं,
और नींद अक्सर लॉग-आउट।

स्क्रीन पर चेहरे तैरते हैं,
"क्या आप मुझे सुन पा रहे हैं?"
हाँ, सुन रहा हूँ...
कुकर की सीटी,
बच्चे की किलकारी,
और बीवी की ख़ामोश शिकायत — "तुम हो, पर होते नहीं।"

शर्ट सलीके से कंधों तक,
नीचे पजामा हँसता है हालात पर।
कैमरा आधा सच दिखाता है,
बाक़ी सब छुपा रहता है।

कभी नेट कट जाता है,
तो लगता है मन भी बफ़रिंग पर है।
कभी घर समझ आता है,
कभी दफ़्तर मन पर छा जाता है।
मेल का इनबॉक्स भरता जाता है,
दिल का इनबॉक्स...
खाली रह जाता है।

शाम को लैपटॉप बंद करता हूँ,
पर काम बंद नहीं होता।
वो फ़ाइल बनकर मन में तैरता रहता है।

घर से काम...
ना पूरा घर हुआ, ना पूरा काम।
बस एक अधूरा गीत, बीच में अटका हुआ।
और हम...
अधूरी ज़िंदगी जीते हैं,
ख़्वाहिशों के पूरा होने की चाह में।

सुधीर कुमार
सलाहकार

इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉरपोरेशन
(रेल मंत्रालय का नवरत्न उपक्रम)
भविष्य पथ पर

आईआरएफसी के 40वें स्थापना दिवस के अवसर पर होटल अशोक में आयोजित तकनीकी सम्मेलन की झलकियां

(दिनांक: 12.12.2025)








INDIAN RAILWAY FINANCE CORPORATION
(A Navratna CPSE under Ministry of Railways)
Technical Conclave
Theme: Innovative Financing to Indian Railways &
Diversification Plan of IRFC 2.0
Sudhir Mathur
K B Nandu
Rajiv Dutt
Anup Prasad
Rahul Kapoor
नवोन्मेष संवाद
December 12, 2025


Celebration of 40th Foundation Day
December 12, 2025
Technical Conclave
Innovative Financing to Indian Railways &
Diversification Plan of IRFC 2.0
"नवोन्मेष संवाद"


INDIAN RAILWAY FINANCE CORPORATION
(A Navratna CPSE under Ministry of Railways)
Technical Conclave
Theme: Innovative Financing to Indian Railways &
Diversification Plan of IRFC 2.0
नवोन्मेष संवाद
December 12, 2025
"नवोन्मेष संवाद"


"नवोन्मेष संवाद"






Celebration of 40th Foundation Day
December 12, 2025
Technical Conclave
Innovative Financing to Indian Railways &
Diversification Plan of IRFC 2.0
"नवोन्मेष संवाद"
Indian Railway Finance Corporation
"नवोन्मेष संवाद"

इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉरपोरेशन
(रेल मंत्रालय का नवरत्न उपक्रम)
भविष्य पथ पर

भारत मंडपम में आईआरएफसी के 40वें स्थापना दिवस के आयोजन की झलकियां (दिनांक: 12.12.2025)






PAPON
LIVE








un tion Da


A NAVRATNA CPSE UNDER
Future on Track
Indian Railway Finance Corporation
Celebrating
th


Celebrating
th
Bharat Mand


Shri Dhrubajyoti Sengupta is 1999 batch IR
and Presently working as Joint Secretary in
Pensions & Pensioners' Welfare.
This Award is bei sented to him in recog
of his in luable c bution in conceptualizi
making Film "tory" .
25


INDIAN RAILWAY FINANCE CORPORATION
Future on Track
विशिष्ट सेवा पुरस्कार
VISHIST SEVA AWARD
Indian Railway Finance Corporation
Celebrating 40th Foundation Day
Sh. Devendra Kumar Garg's acumen of effectively managing Public Relations has ensured seamless coordination, adherence to official decorum and effective communication oss diverse institutional channels.
2025


INDIAN RAILWAY FINANCE CORPORATION
Future on Track
विशिष्ट सेवा पुरस्कार
VISHIST SEVA AWARD
Indian Railway Finance Corporation
Celebrating 40th Foundation Day
Ms. Preeti Rani has rendered exemplary service in the Human Resources Department of IRFC. During the year, she has consistently demonstrated professionalism, commitment and efficiency in managing a wide range of HR functions.
2025


INDIAN RAILWAY FINANCE CORPORATION
Future on Track
विशिष्ट सेवा पुरस्कार
VISHIST SEVA AWARD
Indian Railway Finance Corporation
Celebrating 40th Foundation Day
Shri Ajay Kakkar has significantly contributed in streamlining various HR functions of the organization which has led to timely promotions and strengthening of human resources of IRFC.
2025


INDIAN RAILWAY FINANCE CORPORATION
Future on Track
विशिष्ट सेवा पुरस्कार
VISHIST SEVA AWARD
Indian Railway Finance Corporation
Celebrating 40th Foundation Day
Shri Karan Garg has been instrumental in streamlining financial processes, strengthening team performance, and supporting sustainable organizational growth.
2025


INDIAN RAILWAY FINANCE CORPORATION
Future on Track
विशिष्ट सेवा पुरस्कार
VISHIST SEVA AWARD
Indian Railway Finance Corporation
Celebrating 40th Foundation Day
Ms. Niharika Khattar has been instrumental in driving IRFC's diversification and financing efforts. She has supported rapid appraisal, documentation, and execution of major proposals, ensuring timely disbursements and smooth stakeholder coordination
2025


INDIAN RAILWAY FINANCE CORPORATION
Future on Track
Indian Railway Finance Corporation
Celebrating 40th Foundation Day


Roland
INDIAN RAILWAY FINANCE CORPORATION
Future on Track
Indian Railway Finance Corporation
Celebrating
40th
APARNA GARG
SATISH KUMAR
K. MOSES CHALAI
MANOJ KUMAR DUBEY



गीतों से रिक्त हो चुकी महफ़िल में

रविवार की संध्या के अवसान और सोमवार की प्रथम आहट के उस मध्यरात्रिकाल में, अंततः मैं अपने आवास पर आ पहुँचा।

मध्य नई दिल्ली का तानसेन मार्ग, मंडी हाउस और बंगाली मार्केट से घिरा यह प्रदेश मानो राजधानी का एक सांस्कृतिक तीर्थस्थल ही प्रतीत होता है। केवल यही मार्ग नहीं, अपितु छह अन्य प्रमुख मार्ग भी आकर यहाँ आलिंगनबद्ध हो जाते हैं—सफ़दर हाशमी मार्ग, बाराखम्बा रोड, कोपरनिकस मार्ग, फिरोज़ शाह रोड, भगवान दास रोड और सिकंदरा रोड।

इस संगम-स्थल के चारों ओर कला, साहित्य और चिंतन के अनेक प्रतिष्ठान अपनी गरिमामयी उपस्थिति से वातावरण को आलोकित करते हैं—नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा, रवीन्द्र भवन, फिक्की, इंडियन काउंसिल ऑफ़ वर्ल्ड अफ़ेयर्स, ललित कला अकादमी, इंडियन काउंसिल ऑफ़ हिस्टोरिकल रिसर्च इत्यादि। इनके अतिरिक्त विविध आकारों के अनेक सभागार भी हैं, जहाँ वर्ष भर नाट्योत्सव, संगीत-समारोह और चित्रकला प्रदर्शनियों की निरंतर धारा प्रवाहित होती रहती है।

उन्हीं में से एक सभागार में आज अपराह्न मैं एक उच्चांग संगीत-सभा में उपस्थित हुआ था। पद्मश्री और पद्मभूषण से विभूषित, अंतरराष्ट्रीय ख्याति के दो सुप्रसिद्ध कलाकारों—एक कंठसंगीत और एक वाद्यसंगीत के उस्ताद—द्वारा सुसज्जित वह सुर-संध्या जब समाप्ति की ओर पहुँची, तब घड़ी की सूइयाँ रात्रि के लगभग दस बजने को थीं। उपस्थित श्रोताओं के मन में अभी और सुनने की अभिलाषा शेष थी, किंतु सरकारी नियमों से निर्धारित समय-सीमा का अतिक्रमण संभव न था अतः वहीं उस मधुर महफ़िल का पटाक्षेप हुआ।

स्पॉटलाइट सहित समस्त दैदीप्यमान प्रकाश एक-एक कर बुझने लगे। मंच के नीचे वृत्ताकार सजाए गए दीपों में से एक दीप अभी भी प्रज्वलित था—मानो उसका तेल अभी समाप्त नहीं हुआ था, और किसी ने उसे बुझाने की आवश्यकता भी नहीं समझी। समापन की घोषणा होते ही सभी जन अपने-अपने आसन त्यागकर प्रस्थान करने लगे। मैं किंचित भी उतावला न होकर यह सोचकर बैठा रहा कि सबसे अंत में ही उठूँगा।

सुरों का एक अदृश्य जाल मानो अब भी उस प्रेक्षागृह को आवृत्त किए हुए था। अभी-अभी गुज़रे स्वरों की छायाएँ जैसे दीवारों और गलियारों में ठहर-सी गई थीं। प्रत्येक राग का अपना एक स्वभाव होता है—'भाव' नहीं, क्योंकि भाव तो कलाकार उसमें संचारित करता है। राग स्वयं एक निर्मल, सूक्ष्म माध्यम मात्र है, जिसमें कलाकार अपनी अंतःस्फूर्ति का भाव उँडेलता है और श्रोता भी अपनी अनुभूति का रंग उसमें घोल देता है। और जब किसी दुर्लभ क्षण में कलाकार का भाव और श्रोता का भाव एक ही तरंग पर आकर मिल जाते हैं, तब जो अनिर्वचनीय सौंदर्य जन्म लेता है, वही आज की इस संगीत-सभा में मानो साकार हो उठा था—भावों का एक अत्यंत सूक्ष्म और मधुर सामंजस्य। उसी अदृश्य अनुगूँज से भरे वातावरण में ऐसा प्रतीत होता था मानो सभागार की निस्तब्धता स्वयं स्नेहभरी फुसफुसाहट में कह रही हो—"ज़रा और बैठिए न…

उस पुकार में ऐसा अवरोध्य आकर्षण था कि मैं क्षण भर को सब कुछ विस्मृत कर बैठा—यह कि मेरा आवास वहाँ से लगभग चार किलोमीटर दूर है, रविवार की इस देर रात में वाहन मिलना लगभग असंभव है, संभवतः पैदल ही लौटना पड़ेगा, और घर पहुँचकर भोजन की व्यवस्था भी करनी होगी…

धीरे-धीरे सब लोग चले गए। ऊपर बहुत ऊँचाई पर टँगे दो-एक दीपों को छोड़ शेष समस्त प्रकाश लुप्त हो चुका था। तभी किसी ने मंच के पार्श्व का द्वार खोला, एक आकस्मिक झोंके के साथ जलते हुए दीप की अंतिम लौ भी बुझ गई। उससे उठी काली धुएँ की एक रेखा टेढ़ी-मेढ़ी उठती हुई धीरे-धीरे शून्य में विलीन हो गई। उधर मंच की समस्त सज्जा उतारी जाने लगी थी।

अचानक कई वर्ष पूर्व का एक दृश्य स्मृति में कौंध गया। माँ तब दुर्गापुर के एक अस्पताल में उपचाराधीन थीं, दो-बिस्तरों वाले आईसीयू में। एक गहन रात्रि में बगल के बिस्तर पर अभी-अभी मृत्यु की गोद में ढले एक रोगी के शरीर से जीवनरक्षक और निगरानी करने वाले सभी उपकरण अत्यंत निर्ममता से एक-एक कर हटाए जा रहे थे।

और एक अन्य स्मृति भी उभर आई—तब मैं कॉलेज में पढ़ता था। पूजा-अंक के गीतों के रिकॉर्ड प्रकाशित होने को लेकर बंगालियों में एक विलक्षण उत्साह हुआ करता था, मैं भी प्रतिदिन उसकी ख़बर रखा करता था। महालय से ठीक पहले एक दिन एचएमवी की दुकान में मैंने अत्यंत लोकप्रिय गायिका इला बसु की स्मृति में प्रकाशित एक रिकॉर्ड देखा था—संभवतः तीस मिनट का एक ई.पी. (Extended Play)। उसका शीर्षक था—

"गान फुरालो जलसाघरे" (जलसाघर में गीत समाप्त हो गया)।

उसमें कौन-कौन से गीत थे, यह आज स्मरण नहीं। आज का यह "गीत-समाप्त" जलसाघर मुझे उसी दो स्मृतियों की ओर लौटा ले गया। सफ़ाई का दायित्व निभा रहे एक सज्जन, जिनके एक पैर में हल्की असुविधा थी, धीरे-धीरे चलते हुए मेरे समीप आए और बोले—

"बाबूजी, आप अभी तक बैठे हैं!"

मैंने उत्तर दिया—

"अभी चला जाऊँगा भाई। एक दवा ली है, जिसका प्रभाव पंद्रह मिनट बाद होता है। निश्चिंत रहिए, अभी निकल पड़ूँगा।"

वे इधर-उधर पड़े पानी की बोतलें, चॉकलेट के रैपर आदि समेटने लगे। उनके किंचित घिसटते क़दमों की आहट और कूड़ा उठाने की सरसराहट, मानो सभागार की निस्तब्धता के अंतिम सोपान पर पहुँचकर विलीन हो रही थी।

बैनर उतारते समय हल्के से डोल उठते बहुमूल्य झाड़-फानूस ऐसे प्रतीत होते थे मानो समारोह के उपरांत भी वे तालियों की गूँज को थामे रखना चाहते हों। आवरणहीन बैकड्रॉप उस प्रतिमा की भाँति लग रहा था, जिसकी रंग-गेरू-मिट्टी धुल जाने के पश्चात् विसर्जन के बाद केवल बाँस, लकड़ी, फूस और रस्सियों का ढाँचा शेष रह जाता है—जगमगाहट भले ही मिट जाए, किंतु उसकी सीधी दृढ़ता अब भी उसकी गरिमा की साक्षी देती रहती है अगले पर्व तक पूजास्थल में उसका स्थान सुरक्षित रहता है।

गैलरी की सीढ़ियों के शीर्ष पर स्थित नियंत्रण-कक्ष भी मानो अपनी थकान को छिपाकर, अपनी मर्यादा का ध्वज झुकने न देने के संकल्प में अडिग था। केवल दीवारों पर टँगी कुछ विशाल चित्रकलाएँ—पिकासो के क्यूबिज़्म और रेम्ब्राँ के शैलीगत स्पर्श से प्रेरित—मानो पूर्णतया निर्विकार थीं चारों ओर की इस समूची हलचल से वे तनिक भी प्रभावित नहीं!

तभी वे सज्जन पुनः बोले—

"बाबूजी, तबीयत तो ठीक है न? एम्बुलेंस बुला दूँ क्या?"

चेतना लौटी। मैं बाहर आ गया।

वसंत में पत्तों के झरने का समय था। वृक्षों से टूटकर गिरते सूखे पत्ते मेरे कंधों और सिर को छूते हुए गुजर रहे थे। वे विशाल वृक्ष भी मानो रात्रि के अंधकार में रो-रोकर कह रहे हों—

"नहीं, नहीं, मत जाओ, ओ अंतिम पत्ते, शाखा पर ही ठहरे रहो..."

यवनिका-पतन के पश्चात् जब प्रेक्षागृह रिक्त हो जाता है, तब उस निस्तब्धता की भी एक भाषा होती है—अपनी विशिष्ट शैली, अपनी निजता के साथ। वही मौन वाणी आज मेरी सहचरी बन गई, और उसी ने मेरे मन को भरे रखा—जब वाहन न मिलने के कारण मैं संपूर्ण मार्ग पैदल चलकर अपने घर लौट रहा था।

उत्पल मजूमदार
सलाहकार

AI और Finance: आज के समय में सबसे उपयोगी तकनीक

आज का समय तकनीक का समय है। हर क्षेत्र में नई-नई तकनीकें काम को आसान और तेज बना रही हैं। इनमें सबसे ज्यादा चर्चा जिस तकनीक की हो रही है, वह है Artificial Intelligence (AI)। AI का मतलब है ऐसी मशीन या सॉफ्टवेयर जो इंसानों की तरह सोचकर काम कर सके। आज AI का उपयोग शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग, ऑफिस और खासकर Finance यानी वित्तीय क्षेत्र में तेजी से बढ़ रहा है।

AI ने लोगों के काम करने का तरीका बदल दिया है। पहले जिन कामों में कई घंटे लगते थे, आज वही काम कुछ मिनटों में पूरे हो जाते हैं। यही कारण है कि आज हर बड़ी कंपनी AI का उपयोग कर रही है।

AI के आज के सबसे बड़े उपयोग

आज AI का उपयोग लगभग हर क्षेत्र में हो रहा है। मोबाइल फोन से लेकर बड़े ऑफिस तक AI हर जगह दिखाई देता है।

1. Chatbots और Virtual Assistant

आज कई कंपनियां ग्राहक सेवा के लिए AI चैटबॉट का उपयोग करती हैं। ये ग्राहकों के सवालों का तुरंत जवाब देते हैं। इससे समय की बचत होती है और कर्मचारियों का काम कम हो जाता है।

2. Online Shopping

Amazon, Flipkart जैसी कंपनियां AI की मदद से लोगों की पसंद समझती हैं और उसी हिसाब से प्रोडक्ट दिखाती हैं। इससे ग्राहकों को सही सामान जल्दी मिल जाता है।

3. Education में AI

आज छात्र AI की मदद से नोट्स बनाते हैं, सवाल हल करते हैं और नई चीजें सीखते हैं। इससे पढ़ाई आसान हो रही है।

4. Healthcare में AI

डॉक्टर AI की मदद से बीमारी जल्दी पहचान पा रहे हैं। कई अस्पतालों में AI रिपोर्ट तैयार करने और मरीजों की जानकारी संभालने का काम कर रहा है।

5. ऑफिस के काम में AI

ऑफिस में AI का उपयोग ईमेल लिखने, डेटा तैयार करने, रिपोर्ट बनाने और मीटिंग का रिकॉर्ड रखने में किया जा रहा है। इससे कर्मचारियों का समय बचता है और काम जल्दी पूरा होता है।

Finance क्षेत्र में AI का उपयोग

Finance यानी बैंकिंग और पैसों के प्रबंधन में AI बहुत तेजी से उपयोग हो रहा है। आज बैंक, कंपनियां और निवेशक AI की मदद से सही फैसले ले रहे हैं।

1. Fraud पकड़ने में मदद

AI बैंक खातों और ऑनलाइन ट्रांजैक्शन पर नजर रखता है। अगर कोई गलत या संदिग्ध लेन-देन होता है तो AI तुरंत पहचान लेता है। इससे धोखाधड़ी कम होती है।

2. निवेश में सहायता

आज कई लोग शेयर बाजार और म्यूचुअल फंड में निवेश करते हैं। AI बाजार के डेटा का विश्लेषण करके निवेशकों को सही सलाह देने में मदद करता है। इससे नुकसान का खतरा कम होता है।

3. Loan Approval

पहले बैंक में लोन पास होने में काफी समय लगता था। अब AI ग्राहक की आय, खर्च और रिकॉर्ड देखकर जल्दी फैसला लेने में मदद करता है।

4. Budget Planning

AI लोगों और कंपनियों को खर्च और बचत का सही हिसाब रखने में मदद करता है। इससे आर्थिक योजना बेहतर बनती है।

5. Financial Reports बनाना

कंपनियों में AI बड़ी मात्रा में डेटा को जल्दी पढ़कर रिपोर्ट तैयार कर देता है। इससे कर्मचारियों का समय बचता है और गलतियों की संभावना कम हो जाती है।

ऑफिस में AI का उपयोग कैसे करें

आज लगभग हर ऑफिस में AI का उपयोग किया जा सकता है। छोटे बिजनेस से लेकर बड़ी कंपनियों तक AI काम को आसान बनाता है।

1. Data Entry और रिपोर्ट तैयार करना

AI की मदद से डेटा जल्दी भरा जा सकता है और रिपोर्ट अपने आप तैयार हो सकती है। इससे कर्मचारियों का समय बचता है।

2. Email और Documents बनाना

AI अच्छे ईमेल, प्रेजेंटेशन और दस्तावेज तैयार करने में मदद करता है। इससे काम की गुणवत्ता बेहतर होती है।

3. Meeting Management

AI मीटिंग का रिकॉर्ड रख सकता है और जरूरी जानकारी नोट कर सकता है। इससे कर्मचारियों को हर बात याद रखने की जरूरत नहीं पड़ती।

4. Customer Support

कई कंपनियां AI चैटबॉट का उपयोग करके ग्राहकों की समस्याएं हल कर रही हैं। इससे ग्राहक सेवा तेज होती है।

5. काम की Speed बढ़ाना

AI बार-बार होने वाले काम खुद कर सकता है। इससे कर्मचारी महत्वपूर्ण कामों पर ज्यादा ध्यान दे पाते हैं।

AI से होने वाले फायदे

AI का उपयोग करने से कई बड़े फायदे होते हैं।

1. समय की बचत

AI काम को बहुत तेजी से पूरा करता है।

2. कम गलतियां

AI डेटा को सही तरीके से संभालता है, जिससे गलतियां कम होती हैं।

3. खर्च में कमी

कंपनियों को कम कर्मचारियों में ज्यादा काम करने में मदद मिलती है।

4. बेहतर निर्णय

AI डेटा का विश्लेषण करके सही जानकारी देता है, जिससे अच्छे फैसले लिए जा सकते हैं।

5. उत्पादकता में वृद्धि

कर्मचारी कम समय में ज्यादा काम कर पाते हैं।

भविष्य में AI का महत्व

आने वाले समय में AI का उपयोग और बढ़ने वाला है। बैंकिंग, शिक्षा, स्वास्थ्य और ऑफिस के लगभग हर काम में AI की जरूरत होगी। जो लोग AI सीखेंगे और इसका सही उपयोग करेंगे, उन्हें भविष्य में ज्यादा अवसर मिलेंगे।

Finance क्षेत्र में AI कंपनियों को तेजी से आगे बढ़ाने में मदद करेगा। इससे काम आसान, सुरक्षित और तेज होगा। इसलिए छात्रों, कर्मचारियों और व्यापारियों को AI के बारे में जानकारी होना बहुत जरूरी है।

निष्कर्ष

AI आज की सबसे महत्वपूर्ण तकनीक बन चुकी है। यह न केवल लोगों का काम आसान बना रही है बल्कि Finance और ऑफिस के कामों में भी बड़ा बदलाव ला रही है। AI की मदद से समय बचता है, खर्च कम होता है और काम की गुणवत्ता बेहतर होती है। भविष्य में AI का उपयोग और बढ़ेगा, इसलिए हर व्यक्ति को AI सीखना और समझना चाहिए। सही तरीके से उपयोग करने पर AI इंसानों के लिए एक बहुत बड़ी सहायता साबित हो सकती है।

आरती शर्मा
सचिवीय सहायक

इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉरपोरेशन
(रेल मंत्रालय का नवरत्न उपक्रम)
भविष्य पथ पर

आईआरएफसी कार्यालय में आयोजित हिन्दी कार्यशाला की झलकियां (दिनांक: 23.12.2025)

















इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉरपोरेशन
(रेल मंत्रालय का नवरत्न उपक्रम)
भविष्य पथ पर

आईआरएफसी कार्यालय में आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की झलकियां (दिनांक: 23.12.2025)








इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉरपोरेशन
(रेल मंत्रालय का नवरत्न उपक्रम)
भविष्य पथ पर

आईआरएफसी द्वारा आयोजित वार्षिक खेल-कूद की झलकियां (दिनांक: 20.02.2026)








IRFC











इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉरपोरेशन
(रेल मंत्रालय का नवरत्न उपक्रम)
भविष्य पथ पर

राजभाषा उत्सव-2026 की झलकियां
(दिनांक: 20.03.2026)






SCOPE
राजभाषा उत्सव – 2026
SCOPE
PROMOTING EXCELLENCE


दिनांक: 20 मार्च, 2026 (शुक्रवार)
आयोजक कार्यालय
एनटीपीसी NTPC
नीपको NEEPCO
नॉर्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड
सहयोगी कार्यालय
पावरग्रिड POWERGRID
स्थान: स्कोप ऑडिटोरियम, स्कोप कॉम्पलेक्स, नई दिल्ली


भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), दिल्ली (उपक्रम-2)
के तत्वावधान में
अध्यक्षता: दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन लि. (डीएमआरसी)
राजभाषा उत्सव – 2026
दिनांक: 20 मार्च, 2026 (शुक्रवार)
आयोजक कार्यालय
एनटीपीसी NTPC
नीपको NEEPCO
नॉर्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड
सहयोगी कार्यालय
पावरग्रिड POWERGRID

आईआरएफसी कार्यालय में आयोजित हिन्दी कार्यशाला की झलकियां (दिनांक: 27.03.2026)











इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड

पंजीकृत कार्यालय: यूजी-फ्लोर, ईस्ट टावर, एनबीसीसी प्लेस, भीष्म पितामह मार्ग, लोधी रोड़,प्रगति विहार, नई दिल्ली-110003

इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉरपोरेशन
(रेल मंत्रालय का नवरत्न उपक्रम)
भविष्य पथ पर

आईआरएफसी कार्यालय में आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की झलकियां (दिनांक: 30.03.2026)







पेड़ लगाओ, भविष्य बचाओ

धरती माँ की सूनी गोदी, आज पुकार रही है,
हरियाली की मीठी छाया, हमसे माँग रही है।
कटते वन और बढ़ता प्रदूषण, संकट गहरा लाया,
जीवन की इस दौड़ ने हमसे, प्रकृति का सुख छिनवाया।
पेड़ हैं जीवन के रक्षक, शुद्ध हवा के दाता,
फल, फूल, छाया देकर बनते, मानव के सच्चे नाता।
इनकी जड़ों से मिट्टी बंधती, जल का संचय होता,
इनके बिना यह सुंदर जग, धीरे-धीरे रोता।
जब पेड़ों की शाखाओं पर, पंछी गीत सुनाते,
तब प्रकृति के मधुर स्वरों से, मन के फूल खिल जाते।
हरे-भरे वन, स्वच्छ नदी और शीतल पवन का झोंका,
पेड़ों से ही मिलता हमको, जीवन का हर मौका।
आज समय का यही संदेश, सबको समझाना होगा,
हर आँगन और हर सड़क पर, पौधा एक लगाना होगा।
जन्मदिवस हो या कोई उत्सव, वृक्षारोपण करें,
धरती के इस पावन उपकार का, मिलकर ऋण उतारें।
आओ मिलकर शपथ उठाएँ, हरियाली फिर लाएँगे,
एक नहीं, अनेक पेड़ हम, धरती पर लगाएँगे।
जब हर कोना हरा-भरा होगा, खुशहाल बनेगा संसार,
पेड़ लगाकर हम बचाएँगे, अपना सुंदर कल और परिवार।
पेड़ लगाओ, भविष्य बचाओ - यह केवल नारा नहीं,
आने वाली पीढ़ियों के प्रति, हमारा कर्तव्य सही।
हर पौधा आशा का दीपक है, हर वृक्ष जीवन का आधार,
आओ मिलकर हरित बनाएँ, अपना भारत और संसार। 🌳 🌿

भूमि
पुत्री श्री बृजेश शर्मा
कॉन्ट्रेक्ट कर्मचारी

मेरी इंटर्नशिप आईआरएफसी में - जो होता है, अच्छे के लिए होता है

मेरा नाम तनिषा बिष्ट है। प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना के माध्यम से मुझे इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉर्पोरेशन में इंटर्नशिप करने का अवसर प्राप्त हुआ। प्रारंभ में मैं असमंजस में थी कि मुझे यह इंटर्नशिप करनी चाहिए या नहीं, लेकिन अंततः मैंने इसे स्वीकार करने का निर्णय लिया।

मेरी रुचि वित्त एवं लेखा के क्षेत्र में थी और मैंने आवेदन भी इसी उद्देश्य से किया था। चूंकि आईआरएफसी स्वयं एक वित्तीय संस्था है, इसलिए मुझे वित्त एवं लेखा विभाग के स्थान पर मानव संसाधन एवं प्रशासन विभाग में नियुक्त किया गया। शुरुआत में मैंने कार्यपालक निदेशक एवं मुख्य महाप्रबंधक महोदय से अनुरोध किया कि मुझे वित्त एवं लेखा विभाग में कार्य करने का अवसर दिया जाए। उस समय यह संभव नहीं हो सका क्योंकि सीटें सीमित थीं और विभागों का आवंटन पहले ही किया जा चुका था। मुझे आश्वासन दिया गया कि भविष्य में विभाग परिवर्तन के लिए मेरे अनुरोध पर विचार किया जाएगा।

इसके बाद मैंने मानव संसाधन एवं प्रशासन विभाग में ही कार्य करना प्रारंभ किया। यहाँ मुझे श्री एस. सी. श्रीवास्तव सर का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, जिन्होंने मुझे अनेक महत्वपूर्ण बातें सिखाईं और कार्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता की। उमेश सर के साथ कार्य करते हुए मैंने बहुत कुछ सीखा और आज भी निरंतर सीख रही हूँ।

मुझे अजय कक्कड़ सर का भी विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। उन्होंने कार्य को पूर्ण निष्ठा से ईमानदारी पूर्वक करने की प्रेरणा दी। उनके इस स्नेहपूर्ण व्यवहार ने मुझे एक पारिवारिक वातावरण का अनुभव कराया।

जब मैं पहली बार यहाँ आई थी, तब मैं किसी को नहीं जानती थी और एक नए वातावरण को लेकर थोड़ी चिंतित भी थी। इसी दौरान मेरी मुलाकात प्रीति मैम से हुई, जिन्होंने मेरा साक्षात्कार लिया था। वे अत्यंत सरल, सहयोगी और संवेदनशील हैं। किसी भी समस्या या कठिनाई को मैं उनके साथ निस्संकोच साझा कर सकती हूँ।

इसके अतिरिक्त रोहन सर से भी मुझे बहुत स्नेह और मार्गदर्शन मिला। उनके साथ कभी औपचारिकता का अनुभव नहीं हुआ, बल्कि एक बड़े भाई जैसा अपनापन महसूस हुआ। वे अक्सर कहते हैं, "बच्चों को अभी जीवन का आनंद लेने दो, अपनी ज़िंदगी खुलकर जियो।" उनके ये शब्द हमेशा प्रेरणा देते हैं।

आईआरएफसी में मुझे जितने भी अधिकारी एवं सहकर्मी मिले, वे सभी अत्यंत सहयोगी, प्रेरणादायक और सहृदय हैं। प्रारंभ में मुझे लगा था कि शायद मैं यहाँ लंबे समय तक कार्य नहीं कर पाऊँगी क्योंकि मेरी इच्छा लेखा और वित्त विभाग में जाने की थी। लेकिन आज मुझे महसूस होता है कि वास्तव में जो होता है, अच्छे के लिए होता है। यहाँ मैंने केवल कार्य से जुड़ी बातें ही नहीं सीखीं, बल्कि जीवन के अनेक महत्वपूर्ण मूल्य, अनुभव और सीख भी प्राप्त की हैं।

मैं आगे भी नई-नई चीज़ें सीखने के लिए उत्सुक हूँ और आशा करती हूँ कि इस इंटर्नशिप की समाप्ति तक मैं यहाँ से अनेक यादें, बहुमूल्य अनुभव और महत्वपूर्ण सीख अपने साथ लेकर जाऊँगी।

तनिषा बिष्ट
पीएम इंटर्न

मेरे अम्मा-बाबा (दादा-दादी): मेरे जीवन की सबसे अनमोल धरोहर

मैं हमेशा से इस विषय पर खुलकर बात करना चाहती थी। अपने अम्मा-बाबा के बारे में गर्व से दुनिया को बताना चाहती थी। सच कहूँ तो उनके बारे में लिखते समय शब्द भी कम पड़ जाते हैं और कागज़ के पन्ने भी।

जब भी मैं अपने बचपन के बारे में सोचती हूँ, सबसे पहले मेरे अम्मा-बाबा का चेहरा आँखों के सामने आ जाता है। यदि कोई मुझसे पूछे कि मेरी जिंदगी के सबसे यादगार और सबसे खूबसूरत पल कौन से हैं, तो मैं बिना किसी झिझक के उन सभी पलों का नाम लूँगी जो मैंने उनके साथ बिताए। उनकी डाँट, उनका स्नेह, उनका साथ, उनकी आवाज़-सब कुछ आज भी मेरी स्मृतियों में वैसे ही जीवित है।

मैं बहुत छोटी थी जब मेरी अम्मा बीमारी से लड़ते-लड़ते इस दुनिया को छोड़ गईं। उनकी कुछ धुंधली-सी यादें आज भी मेरे पास हैं-मेरा नाम प्यार से पुकारना, मेरी छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देना और कभी-कभी मुझे डाँटना भी। उनके जाने के बाद जब भी किसी बच्चे को उसकी दादी के साथ देखती थी, मन में एक खालीपन-सा महसूस होता था। लगता था कि यदि मेरी अम्मा होतीं, तो शायद मुझे भी उसी तरह दुलार करतीं। लेकिन मेरे बाबा ने कभी मुझे प्यार की कमी महसूस नहीं होने दी। उनके स्नेह की गहराई को शब्दों में बाँधना आसान नहीं है। वे हर छोटे-बड़े काम के लिए मुझे आवाज़ लगाते थे। अक्सर अपने नाखून भी मुझसे ही कटवाते थे। उस समय कभी नहीं सोचा था कि एक दिन वही छोटी-सी जिम्मेदारी निभाने के लिए भी मैं तरस जाऊँगी।

उन्हें गए कई वर्ष बीत चुके हैं, लेकिन आज भी ऐसा कोई दिन नहीं जाता जब उनकी याद मेरे साथ न हो। आँखें बंद करते ही उनका चेहरा सामने आ जाता है। मुझे लगता है कि उनका प्रेम आज भी मेरे जीवन का हिस्सा है। वे भले ही शारीरिक रूप से हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी सीख, उनके संस्कार और उनकी स्मृतियाँ हमेशा मेरे साथ हैं।

आज सबसे अधिक अफसोस इस बात का होता है कि मैंने उनकी अधिक तस्वीरें नहीं लीं, उनकी आवाज़ रिकॉर्ड नहीं की। तब कभी यह नहीं सोचा था कि एक दिन उनकी तस्वीरों और यादों के सहारे ही उनसे मिलने की कोशिश करनी पड़ेगी। लेकिन जब भी मन बहुत उदास होता है, उनकी यादें मुझे संभाल लेती हैं। ऐसा लगता है मानो वे आज भी मेरे आसपास हैं और मुझे हौसला दे रहे हैं। मेरा मानना है कि हर बच्चे के बचपन की सबसे सुंदर पहचान उसके दादा-दादी और नाना-नानी होते हैं। उनके बिना बचपन की कल्पना अधूरी है। यदि मुझे जीवन में कभी अपने पुराने दिनों को फिर से जीने का अवसर मिले, तो मैं उन पलों को चुनूँगी जो मैंने अपने अम्मा-बाबा के साथ बिताए थे-उनके हाथों से खाना खाना, उनकी गोद में बैठना, उनकी सेवा करना और उनके स्नेह में खो जाना।

अंत में मैं हर बच्चे से यही कहना चाहूँगी कि अपने दादा-दादी, नाना-नानी और परिवार के बुजुर्गों के साथ समय बिताइए। उनसे जुड़िए, उनकी बातें सुनिए और उनकी यादों को संजोकर रखिए। उनका प्रेम निस्वार्थ होता है और उनकी दुआएँ जीवन की सबसे बड़ी पूँजी होती हैं। समय बीत जाता है, लेकिन उनके दिए हुए संस्कार और उनका स्नेह जीवनभर हमारा साथ निभाते हैं।

चेतना शर्मा
पीएम इंटर्न

प्रतियोगी परीक्षायें V/S पेपर लीक

परिश्रम ही सफलता की कुंजी है जिससे सफलता के हर ताले खुल जाते हैं। परिश्रम वो दीया है जो अंधेरे को चीरकर सफलता का उजाला लाता है। परंतु आज के समय में भ्रष्टाचार का अँधेरा इस हद तक चारों ओर फैल चुका है कि हर कोई सफलता पाने के लिए शॉर्टकट का रास्ता अपनाकर सफल होना चाहता है। इसका एक ताजा उदाहरण अभी हाल ही में हुए प्रतियोगिता परीक्षा नीट (NEET) का पेपर लीक काण्ड है।

हर साल भारत मे पाँच करोड़ से ज़्यादा छात्र UPSC, NEET, SSC, बैंकिंग, रेलवे जैसी प्रतियोगी परीक्षा में बैठते हैं। एक पेपरलीक सिर्फ़ एक एग्ज़ाम कैसिल नहीं करता वो लाखों सपनों को कैंसिल कर देता है। प्रारंभिक जांच में पता चला कि परीक्षा से 48 घंटे पहले कुछ सेंटरो पर मॉक टेस्ट के नाम पर असली पेपर बांटा गया। छात्रों से 15-30 लाख रुपये लिए गए। जो मेहनत से तैयारी कर रहे थे, उनका भरोसा टूटा। 2024 के बाद यह दूसरा बड़ा विवाद है। कई छात्रों ने दोबारा परीक्षा की माँग की। पैरेंट्स के लिए कोचिंग फीस 2-3 लाख, पेपर के लिए 20 लाख। मध्यम वर्ग के लिए ये "लॉटरी" बन गयी है। अगर अयोग्य छात्र MBBS में आ गये, तो 5 साल बाद ऑपरेशन टेबल पर वही बैठेगा।

जब 2 साल की मेहनत के बाद पता चले कि सीटें पहले ही बिक गयी है, तो सिस्टम से भरोसा उठ जाता है। 2024 NEET विवाद के बाद 43% छात्रों ने डिप्रेशन के लक्षण बताए थे। कोटा, इलाहबाद, पटना में हर पेपर लीक के बाद छात्र आत्महत्या के केस बढ़ते हैं। इसका परिवार की उम्मीदों का बोझ + समाज के तानों का परिणाम, अकेलेपन का शिकार होना होता है। "मेहनत करो तो सफल होंगे" - ये विश्वास टूट जाता है। कई होनहार छात्र दूसरी बार तैयारी छोड़ देते है। किसान, मजदूर, परिवार अपनी जमीन गिरवी रखकर फीस भरते हैं। एग्जाम कैंसिल होने पर वह कर्ज बच्चों की उम्र से बड़ा हो जाता है। जिसके पास 20 लाख रुपए है वो पेपर ख़रीद लेता है, ग़रीब छात्र सिर्फ़ देखता रह जाता है। मैरिट की जगह पैसा जीत जाता है। दो तीन बार पेपर लीक हो तो छात्र ओवर ऐज हो जाता है। फिर न सरकारी नौकरी न प्राइवेट में फ्रेशर। टैलेंटिड बच्चे निराश होकर विदेश चले जाते है। देश मेधा खो देता है।

NEET पेपर लीक सिर्फ एक एग्जाम का मामला नहीं है। ये इस सवाल का है कि क्या भारत में मेहनत अभी भी मायने रखती है? 24 लाख बच्चों के माता-पिता ने अपनी साल भर की कमाई कोचिंग और उम्मीद में लगा दी। अगर सिस्टम भरोसा नहीं जीत पाया, तो डॉक्टर शब्द ही संदेह के घेरे में आ जाएगा। अब गेंद संसद और NTA के कोर्ट में है। सुधार होगा या 2027 में फिर वही हेडलाइन? इस संदर्भ में सरकार को कोई ठोस कदम उठाने होंगे अन्यथा देश को गंभीर परिणाम भुगतने होंगे। सख्त कानून, डिजिटल सुरक्षा, दोषियों पर कड़ी कार्रवाई—ये जरूरी पूरे शिक्षा और चयन प्रणाली पर सवाल है। 25 लाख से ज्यादा बच्चों ने अपने माता-पिता की मेहनत की कमाई कोचिंग, किताबों और उम्मीद में लगा दी। अगर सिस्टम पारदर्शी नहीं हुआ, अगर लीक रोकने के ठोस कदम नहीं उठे, तो 'डॉक्टर' जैसे शब्द का सम्मान ही खत्म हो जाएगा। अब गेंद संसद और NTA के कोर्ट में है। सख्त कानून, डिजिटल सुरक्षा, दोषियों पर कड़ी कार्रवाई—ये जरूरी हैं। सुधार हुआ, तो 2027 में नई हेडलाइन बनेगी। नहीं हुआ, तो फिर वही पुराना दर्द दोहराया जाएग

उनके लिए NEET, JEE या अन्य प्रतियोगी परीक्षाएं सिर्फ एक टेस्ट नहीं, बल्कि गरीबी से बाहर निकलने की एकमात्र सीढ़ी हैं। लेकिन जब पेपर लीक हो जाता है या तकनीकी कारणों से एग्जाम रद्द हो जाता है, तो सबसे बड़ा नुकसान इन्हीं बच्चों का होता है। कई छात्र उम्र सीमा पार कर जाते हैं, कई साल बर्बाद हो जाते हैं, और उनके माता-पिता का कर्ज और बढ़ जाता है। पेपर लीक का मतलब सिर्फ प्रश्नपत्र का बाहर आना नहीं है। इसका मतलब है कि मेरिट की जगह पैसा जीत रहा है। जिनके पास पैसा है, वे पेपर खरीद लेते हैं। नेता और दलाल ऐश करते हैं, और मेहनत करने वाला छात्र सिर्फ असहाय होकर देखता रह जाता है। बार-बार पेपर लीक होने से छात्रों का भरोसा टूट जाता है। न सरकारी नौकरी का भरोसा बचता है, न प्राइवेट सेक्टर में अवसर दिखता है। निराश होकर लाखों टैलेंटेड बच्चे विदेश चले जाते हैं, और देश अपना भविष्य खो देता है।

निशा गुप्ता
पत्नी श्री मनोज कुमार गुप्ता
प्रबंधक (प्रशासन)

सिर्फ 10 मिनट नहीं थे वो

आज मेरे घर में चायपत्ती खत्म हो गई थी
सोचा, बाहर जाने से अच्छा है
Blinkit से ऑर्डर कर दूँ।
मोबाइल उठाया, दो क्लिक किए,
और स्क्रीन पर चमक उठा 10 मिनट में डिलीवरी।
मन में सुकून आ गया।
काम में लग गई।
लेकिन आज वो 10 मिनट
हम सब अब इसी के आदी हो गए हैं।
एक बटन दबाया, और मान लिया
अब सामने वाला इंसान नहीं, एक मशीन काम करेगी।
समय पर आए तो ठीक,
और अगर दो-चार मिनट भी देर हो जाए तो गुस्सा
शिकायत, या ऑर्डर कैंसल।
आज भी दरवाज़े पर दस्तक हुई
लेकिन समय से थोड़ी देर बाद।

दरवाज़ा खोला तो सामने एक लड़का खड़ा था।
उम्र बहुत ज़्यादा नहीं,
लेकिन चेहरे पर ज़िम्मेदारियों की झुर्रियाँ थीं।
उसकी साँसें तेज़ थीं,
हाथ हल्के काँप रहे थे,
और आँखें
जैसे कुछ कहती-कहती रुक गई हों।
मैंने सामान लिया।
लेकिन जाने क्यों मुँह से बस एक ही सवाल निकला
सब ठीक है?
आप बहुत परेशान लग रहे हो
बस, यहीं वो टूट गया।
उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। बिना आवाज़ के।
जैसे किसी ने सालों से रोने की इजाज़त ही नहीं दी हो।
थोड़ी देर बाद बोला, मैम
आज तक किसी ने ये नहीं पूछा।
लेट होने पर लोग सिर्फ गुस्सा करते हैं।
कभी सामान लौटा देते हैं,
कभी ऑर्डर कैंसल।
वो रुक गया।
साँस संभाली।
फिर बहुत धीमी आवाज़ में बोला
मेरी पत्नी हॉस्पिटल में है। अभी उसकी डिलीवरी है।
फोन आ रहा है, जल्दी आ जाओ
उस पल जैसे समय थम गया।
मेरे सामने कोई डिलीवरी बॉय नहीं खड़ा था।
मेरे सामने एक पति था
जो पिता बनने वाला था।
उसने आगे कहा
रास्ते में ही हॉस्पिटल पड़ता है।
सोचा एक बार देख आऊँ।
बस एक पल
लेकिन उसी पल में देर हो गई।
वो शर्मिंदा था।
जैसे उसने कोई गुनाह कर दिया हो।
लेकिन सच्चाई ये थी
वो गुनहगार नहीं, मजबूर था।
एक तरफ उसकी पत्नी दर्द से जूझ रही थी।
दूसरी तरफ काम जिससे घर चलता है।
अगर वो ड्यूटी छोड़ देता, तो शायद
नौकरी चली जाती
और अगर देर करता, तो लोगों का गुस्सा झेलना पड़ता।
आज वो बीच में फँसा था परिवार और पेट के बीच।
मैं पूरी तरह निशब्द थी। आँखें भर आईं।
दिल भारी हो गया।
हम जिन 10 मिनट के लिए लड़ते हैं,
चिल्लाते हैं,
कभी-कभी वही किसी की ज़िंदगी के सबसे अनमोल पलों को छीन लेते हैं।
आज मैंने एक बात समझी
हर देर लापरवाही नहीं होती।
हर इंसान लापरवाह नहीं होता।
कुछ लोग चुपचाप अपनी खुशियाँ,
अपने आँसू
और अपने सपने दूसरों की सुविधाओं के लिए कुर्बान कर रहे होते हैं।
हम कमरे में बैठकर समय गिनते हैं।
और कोई सड़क पर अपनी ज़िंदगी समेटे भाग रहा होता है।
एक छोटी-सी अपील
अगली बार अगर कोई थोड़ा देर से आए
तो गुस्सा करने से पहले बस एक बार पूछ लीजिए
सब ठीक है?
हो सकता है सामने खड़ा इंसान
किसी का पति हो, किसी का पिता हो,
या किसी का बेटा
जो अपनी ज़िम्मेदारियों के नीचे दबा
बस थोड़ी सी इंसानियत चाहता हो।
क्योंकि हम ग्राहक हैं
लेकिन वो भी इंसान हैं।
इंसान पहले।
सुविधा बाद में।

-साभार



इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉरपोरेशन

(रेल मंत्रालय का नवरत्न उपक्रम)

भविष्य पथ पर

इंडियन रेलवे फाइनेंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड
पंजीकृत कार्यालय: यूजी-फ्लोर, ईस्ट टावर, एनबीसीसी प्लेस, भीष्म पितामह मार्ग, लोधी रोड़,प्रगति विहार, नई दिल्ली-110003